जगदगुरू रामपाल दास का भंडाफोड़

जगदगुरू रामपाल दास का भंडाफोड़

प्रिय पाठकों –

जैसा की आप सब को पता है कि हरियाणा के रोहतक जिले के करौंथा गाँव तथा हिसार जिले के बरवाला मे रामपाल ने कबीरपंथ नाम से एक पंथ चलाया है। अपनी किताबों और प्रवचनों मे ये सच को झूठ और झूठ को सच सिद्ध करने की निरर्थक कोशिश में लगा रहता है। इस ने अपनी पुस्तकों मे बेसिरपैर की बकवासे भर रखी है। संस्कृत हो या पंजाबी सब के गलत अर्थ करता है। संत कबीर दास जी को पूर्ण परमात्मा बताता है। क्या परमात्मा अपूर्ण भी होता है?

संत कबीर जी का नाम लेकर कबीर जी को ही बदनाम करता है। कबीर जी परमात्मा को सर्वव्यापक मानते हैं । कबीर जी के कुछ वचन देखें

स्वयं सन्त कबीर दास जी ने भी ईश्वर को सर्वव्यापक माना है। (गुरू ग्रन्थ पृष्ठ 855)

कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥ सरब बिआपी= सर्वव्यापी
कबीर जी कह रहे हैं कि हे मेरे परमात्मा तू सर्वव्यापी है।
तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी॥
तुम्हारे समान कोई दयालु नहीं है और मेरे समान कोई पापी नहीं है

कबीर जी ब्रह्म का अर्थ परमात्मा लेते है काल नहीं -
कबीरा मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु ॥ (गुरू ग्रन्थ पृष्ठ 1373)

गरभ वास महि कुलु नही जाती। गर्भ के अंदर कोई भी कुल या जाती नहीं होती।
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥ सभी की उत्पति ब्रह्म अर्थात ईश्वर से होती है (गुरू ग्रन्थ 324)

लेखक -- ऋषि दयानंद का सेवक

भिवानी

मामला | आश्रम के अनुयायी बोले करंट लगा, मां ने लगाया हत्या का आरोप

सत्संग में गए युवक की मौत

भास्कर न्यूज | भिवानी

बरवाला आश्रम में सत्संग सुनने गए तेलीवाड़ा के एक युवक की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। आश्रम के अनुयायी युवक को देर रात उसके घर छोड़ गए। परिजन अस्पताल लेकर गए तो चिकित्सकों ने उसे मृत बताया। अनुयायियों ने परिजनों को बताया कि युवक को करंट लग गया, मगर युवक की मां ने हत्या का आरोप लगाया है।

बरवाला पुलिस मामले की जांच कर रही है। अभी तक कोई मामला दर्ज नहीं हो पाया है। जानकारी अनुसार, तेलीवाड़ा वासी 23 वर्षीय युवक सौरभ 19 जून को सुबह करीब नौ बजे बरवाला आश्रम में सत्संग सुनने गया था। सौरभ का पूरा परिवार अक्सर वहां जाता है। सौरभ का एक छोटा भाई सचिव व पिता आत्मप्रकाश भी बरवाला आश्रम में जाते हैं। बुधवार देर रात आश्रम से अनुयायी युवक को लेकर उसके घर पहुंचे और बताया कि इसे करंट लग गया है। इसके बाद रात 12 बजे परिजन उसे सामान्य अस्पताल लाए। यहां चिकित्सक ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मां आशा देवी ने बताया कि उसके बेटे की हत्या की गई है। परिजनों ने पलिस से मामले की पूरी जांच की मांग की है। बरवाला से आए जांच अधिकारी भजनलाल ने बताया कि उन्हें सूचना मिली थी कि बरवाला आश्रम में एक युवक को करंट लग गया है। युवक को भिवानी भेज दिया है। युवक की मां हत्या का आरोप लगा रही है। अभी शव का पोस्टमार्टम नहीं हुआ है। रिपोर्ट के बाद ही आगामी कार्रवाई की जाएगी।

तेलीवाड़ा निवासी आत्मप्रकाश की मौत पर विलाप करते परिजन।

हादसे में युवक की जान गई

भिवानी| तालू में अज्ञात वाहन की चपेट में आने से बाइकसवार युवक की मौत हो गई। पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक पर केस दर्ज कर लिया है। हादसा 18 जून की रात साढ़े नौ बजे हुआ। भैणी भैरो वासी विजय कुमार अपनी रिश्तेदारी में तालू आया था।

यहां वह अड्डे से थोड़ी दूरी पर ही था कि एक अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दी। वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे पीजीआई रोहतक ले जाया गया, जहां उसने दम तोड़ दिया। पुलिस ने रिश्तेदार तालू वासी जोगेंद्र की शिकायत पर अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाकर हादसा करने का मामला दर्ज किया है। जांच अधिकारी एएसआई ओमप्रकाश ने बताया कि हादसा करने वाले वाहन का नंबर हमे मिला है, जिसकी डिटेल निकलवाई जा रही है। जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

http://epaper.bhaskar.com/bhiwani-bhaskar/101/21062013/cph/1/

DAINIK BHASKAR . 21 JUNE 2013 . BHIWANI BHASKAR. HARYANA

दैनिक भास्कर । हरियाणा। भिवानी संस्करण । 21 जून 2013

11000 वोल्ट से आकाश मार्ग से उड कर बचा लिया किन्तु अपने ही आश्रम में 220 वोल्ट से क्यों नहीं बचा पाए जगदगुरू रामपाल दास?

"11000 वोलटेज के तार से छुड़वाना"

मैं भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम निवासी गांव धनाना, जिला सोनीपत जो कि फिलहाल शास्त्री नगर रोहतक (हरियाणा) का निवासी हूँ। सतगुरु जी से नाम उपदेश लेने से पहले मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी, परिवार का कोई भी ऐसा सदस्य नहीं था जो कि कभी बीमार न रहता हो, मेरी पत्नी को भूत-प्रेत बहुत ही ज्यादा परेशान करते थे। इतना कष्ट रहने के बावजूद हम देवी देवताओं की बहुत पूजा करते थे तथा मेरी हनुमान जी में बहुत ज्यादा आस्था थी। लेकिन घर में संकट पर संकट आते जा रहे थे। किसी भी काम में बरकत नहीं हो रही थी। पूर्ण परमात्मा सतगुरु रामपाल जी महाराज जी मेरे परिवार के होने के कारण हम उनको पूर्ण परमात्मा नहीं मान पाये जिसका खामियाजा हमें कई वर्षों तक झेलना पड़ा। तभी गांव सिंहपुरा निवासी भक्त विकास ने मुझे बताया कि आपके घर में पूर्ण परमात्मा जगत् गुरु रामपाल जी महाराज आये हुए हैं और आप कहां सोये पड़े हो, तो मैंने कहा कि काल ने हमें कष्ट ही इतना दे रखा है कि हमें वहां के बारे में जानने का टाईम ही नहीं मिला। सारा समय डाक्टरों के चक्कर काटने में चला जाता है। ऊपर से आर्थिक तंगी भी बहुत रहती है। उस भक्त ने मुझे काफी समझाया, पूर्ण परमात्मा की ऐसी दया हुई कि मैं संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेने के लिए अक्तूबर 2010 में सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचा। नाम उपदेश लेने के बाद सतगुरु जी ने अपना दया का पिटारा खोल दिया और मुझे वो सुख अनुभव होने लगे जिनका वर्णन इस जुबान से कर पाना बहुत मुश्किल है।

मेरी पत्नी को भूत-प्रेत सता रहे थे। सतगुरु देव जी की दया से अब वह पूर्ण रूप से ठीक है। 7 सितम्बर 2011 को मेरा लड़का मोहित उम्र 12 साल जो कि मेरे कहने पर मिस्त्री को बुलाने के लिए गया था। मेरा लड़का मिस्त्री के मकान की छत पर चढ़ गया तथा छज्जे पर चला गया। छज्जे के साथ ऊपर 11000 (ग्यारह हजार) वोलटेज के बिजली के तार थे। लड़के तथा तारों के बीच में केवल एक फीट की दूरी थी। जब वह उनके नजदीक गया तो तारों ने लड़के को खेंच लिया और लड़के के सिर पर तार चिपक गया तथा एक इन्च गहरा घुस गया व मुंह जल गया और बिजली सारे शरीर में प्रवेश करके पैर के अंगूठे की हड्डी को तोड़ कर निकलने लगी। उसी समय सतगुरु रामपाल जी महाराज आकाश मार्ग से आए तथा मेरे लड़के को बहुत ही चमकदार (तेजोमय) शरीर सहित दिखाई दिये जैसे हजारों ट्यूबों का प्रकाश हो रहा हो। उन्होंने लड़के का हाथ पकड़ कर बिजली से छुड़ाकर छज्जे पर लिटा दिया। फिर लड़के की सतगुरु जी से बहुत बातें हुई तथा जब सतगुरु जी जाने लगे तो लड़के ने पूछा कि गुरु जी कहां जा रहे हो तो गुरु जी ने कहा कि बेटा मैं तेरे साथ हूँ तू घबरा मत। उस समय मेरे लड़के मोहित की माता जी भी वहीं पर थी। उसने यह दृश्य अपनी आँखों देखा तथा वह बहुत घबरा गई। क्योंकि लड़के के शरीर से बिजली के लपटें निकल रही थी।

ज्ञान गंगा पृष्ठ 286

सन्त रामपाल दास जी महाराज भी परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) के उन अवतारों में से एक हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा अधर्म का नाश करते हैं। अब विश्व में शांति होगी। सर्व धर्म तथा पंथों के व्यक्ति एक होकर आपस में प्रेम से रहा करेंगे। राजनेता भी निर्भिमानी, न्यायकारी तथा परमात्मा से डर कर कार्य करने वाले होंगे। जनता के सेवक बनकर निष्पक्ष कार्य किया करेंगे। धरती पर पुनः सत्ययुग जैसी स्थिति होगी। वर्तमान में धरती पर वह अवतार सन्त रामपाल दास जी हैं।

धरती पर अवतार पुस्तक से पृष्ठ 12

ये पुस्तक रामपाल की वैबसाइट पर उपलब्ध है तथा रामपाल के आश्रम मे भी मिलती है। देखो रामपाल खुद को ईश्वर का अवतार सिद्ध कर रहा है। क्या आप सहमत हैं?

तत्वदर्शी पूर्ण परमेश्वर के अवतार तत्वदर्शी जगतगुरू पूर्ण सन्त रामपाल का जादुई विज्ञान- अध्यात्मिक ज्ञान गंगा।(482-483)

राबिया के प्रमाण में साखियाँ गरीबदास साहेब रचित ग्रंथ साहेब से पृष्ठ नं. 261 वाणी नं. 56 से 59 तक।

गरीब, सुलतानी मक्के गये, मक्का नहीं मुकाम। गया रांड के लेन कूं, कहै अधम सुलतान।।
गरीब, राबिया परसी रबस्यूं, मक्कै की असवारि। तीन मंजिल मक्का गया, बीबी कै दीदार।
गरीब, फिर राबिया बंसरी बनी, मक्कै चढाया शीश। सुलतान अधम चरणौं लगे, धनि सतगुरु जगदीश।।
गरीब, बंसरी सैं बेश्वा बनी, शब्द सुनाया राग। बहुरि कमाली पुत्री, जुग जुग त्याग बैराग।।

प्रमाण के लिए गरीबदास साहेब रचित ग्रंथ साहेब अंग पृष्ठ नं. 375 पर वाणी नं. 361से 366 तक

गरीब राबी कुं सतगुरु मिले, दीना अपना तेज। ब्याही एक सहाब सैं, बीबी चढ़ी न सेज।।
गरीब, राबी मक्के कूं चली, धर्या अल्हका ध्यान। कुत्ती एक प्यासी खड़ी, छुटे जात हैं प्राण।।
गरीब, केश उपारे शीश के, बाटी रस्सी बीन। जाकै बस्त्र बांधि कर, जल काढ्या प्रबीन।।
गरीब, सुनहीं कूं पानी पीया, उतरी अरस अवाज। तीन मंजिल मक्का गया, बीबी तुम्हरे काज।।
गरीब, बीबी मक्के पर चढ़ी, राबी रंग अपार। एक लाख अस्सी जहाँ, देखै सब संसार।।
गरीब, राबी पटरा घालि कर, किया जहाँ स्नान। एक लाख अस्सी बहे, मंगर मल्या सुलतान।।

लिए तैयार हुई इतने में वह मक्का ज्यों का त्यों मकान (पवित्र मस्जिद) वहाँ से उठकर राबिया के लिए उस कुएँ के पास आ गया। आकाश वाणी हुई कि ''हे भक्तमति तेरे लिए वह मक्का तीन मंजिल अर्थात् 60 मील से उड़ कर आया है। आप इस में प्रवेश करो। राबिया ने उसमें प्रवेश किया। मक्का वहाँ से उठा। वायुयान की तरह उड़ कर वापिस यथा स्थान पर आ गया।

पहला प्रयोग - जगदगुरू रामपाल के अनुयायियों को तीन मंजिल के मकान की छत पर चढ कर रामपाल के सर पर ईंट फ़ैंकनी चाहिए । यदि वह ईंट को हवा में उड़ा दे तो हम भी रामपाल को पूर्ण सन्त मान लेंगे। यदि रामपाल का सिर फ़ूट जाए तो नकली सन्त । कम से कम 1000 चेलों को ये प्रयोग करना चाहिए क्योंकि एक ईंट का निशाना चूक भी सकता है।

दूसरा प्रयोग- रामपाल को कहें कि केवल एक ईंट को ही उड़ा कर 60 मील दूर भेज दे। यदि रामपाल नाकामयाब होता है तो वह रबिया से भी घटिया सन्त माना जाएगा। क्योंकि यदि रबिया हजारों – लाखों ईंटो से बनी मक्का को 60 मील उड़ा सकती है तो क्या पूर्ण संत रामपाल 1 ईंट को भी नहीं उड़ा सकता? प्रयोग जरूर करें ।

क्या किसी अनुयायी ने रामपाल के लिए की गई आकाशवाणी सुनी। जब रबिया के लिए आकाशवाणी हो सकती है तो पूर्ण सन्त रामपाल के लिए आकाशवाणी क्यों नहीं हो सकती।

रामपाल का इतिहास ज्ञान

जगत गुरू रामपाल अपनी पुस्तक भक्तिबोध मे पृष्ठ 84 पर लिखता है कि { जैसे एक रोटी तैमुरलंग ने कविर्देव (कबीर साहब) को दी थी, उसे कबीर साहेब ने सात पीढी का राज्य दे दिया।

रामपाल ने कबीरदास जी को बदनाम करने मे कोइ कसर नहीं छोड़ी। जब भी कोइ विवेकी मनुष्य ये भक्तिबोध पढेगा तो सोचेगा कि जिस तैमूर लंग ने भारत को लूट कर हजारों निर्दोष भारतीयों को गाजर मूली की तरह काटा तो कबीर जी ने उसे सात पीढी का राज्य दे दिया? क्या सन्त कबीर दास जी मे इतनी बुद्धि नहीं थी कि हजारों निर्दोषों का कत्ल करने वाले तैमूरलंग की सात पीढी का राज्य देना गलत है? तैमूर से ज्यादा रोटियां तो कबीर जी के माता पिता ने दी होंगी और उन भारत वासियों ने दी होगी जिन निरपराधों को तैमुर ने मौत की नींद सुला दिया था। तो फिर कबीर जी ने उन्हे राज्य क्यों नहीं दे दिया? रामपाल ने झूठ लिखते वक्त

इतिहास का ध्यान नहीं रखा । तैमूर का समय (9 अप्रैल 1336 से 18 फरवरी 1405) है। कबीर दास जी का जन्म 1398 मे हुआ। तैमूर ने 17 दिसम्बर 1398 को दिल्ली मे मुहम्मद तुगलक से लड़ाई की। कबीर जी 7 साल की आयु तक दिल्ली नहीं गए और तैमूर कभी भी बनारस नही गया। **क्या रामपाल का झूठ आपकी पकड़ मे आया?**

।। साहेब कबीर व गोरख नाथ की गोष्ठी।।

एक समय गोरख नाथ (सिद्ध महात्मा) काशी (बनारस) में स्वामी रामानन्द जी (जो साहेब कबीर के गुरु जी थे) से शास्त्रार्थ करने के लिए (ज्ञान गोष्टी के लिए) आए। जब ज्ञान गोष्टी के लिए एकत्रित हुए तब कबीर साहेब भी अपने पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी के साथ पहुँचे थे। एक उच्च आसन पर रामानन्द जी बैठे उनके चरणों में बालक रूप में कबीर साहेब (पूर्ण परमात्मा) बैठे थे। गोरख नाथ जी भी एक उच्च आसन पर बैठे थे तथा अपना त्रिशूल अपने आसन के पास ही जमीन में गाड़ रखा था। गोरख नाथ जी ने कहा कि रामानन्द मेरे से चर्चा करो। उसी समय बालक रूप (पूर्ण ब्रह्म) कबीर जी ने कहा - नाथ जी पहले मेरे से चर्चा करें। पीछे मेरे गुरुदेव जी से बात करना। (अध्यात्मिक ज्ञान गंगा पृष्ठ 39)

योगी गुरू गोरखनाथ जी का समय 11वीं 12 वी शताब्दी स्वीकार किया जाता है। अलाउद्दीन खिलजी से सम्बन्धित इतिहास मे वर्णन मिलता है कि अलाउद्दीन खिलजी ने गोरखपुर में गुरु गोरखनाथ जी का मन्दिर गिराया था। क्योंकि गोरखनाथ जी पहले धर्मगुरु थे जिन्होने गोरक्षा के लिए अपने शिष्यों को शस्त्र धारण करवाया था तथा मुस्लिम आक्रांताओं से युद्ध किया था। अलाउद्दीन खिलजी का शासन काल 1353-1373 है। इस लिए गोरखनाथ जी का समय 12वी शताब्दी से बाद का नहीं है। सन्त कबीर दास जी का समय 1398-1518 है (कुछ के अनुसार 1440-1518) । जिनके समय मे200 साल से अधिक का अन्तर हो वह कैसे शास्त्रार्थ कर सकते हैं। रामपाल अपने चेलों को उल्लू बना रहा है।

गुरु नानक और कबीर दास की ज्ञान चर्चा

अपनी पुस्तक अध्यात्मिक ज्ञान गंगा पृष्ठ-45-46 पर पाखंडी रामपाल की एक और हेराफ़ेरी सामने आती हैं।

एक दिन एक जिन्दा फकीर बेई दरिया पर मिले तथा नानक जी से कहा की आप बहुत अच्छे प्रभु भक्त नजर आते हो। कृपा मुझे भी भक्ति मार्ग बताने की कृपा करे। मैं बहुत भटक लिया हूँ। मेरा संशय समाप्त नहीं हो पाया हैं। जिन्दा रूप में कबीर परमेश्वर ने कहा की गुरु किसे बनाऊँ?

कोई पूरा गुरु मिल ही नहीं रहा जो मन के संशय समाप्त करके मन को भक्ति में लगा सके।स्वामी रामानंद जी मेरे गुरु हैं पर उनसे मेरा संशय समाप्त नहीं हो पाया हैं। नानक जी ने कहा मुझे गुरु बनाओ आपका कल्याण निश्चित हैं।

समीक्षा:- कबीर जी का जन्म हुआ सन 1398 में हुआ था जबकि गुरू नानक देव जी का जन्म हुआ 1469 में अर्थात कबीर दास और नानक जी की आयु में करीब 70 साल का अन्तर है। यदि यह भी माना जाए कि कबीर जी को गुरू नानक देव जी 20-30 साल की उम्र में मिले होंगे। तो क्या 20-30 साल के युवक गुरू नानक जी इतने अपरिपक्व थे कि 90-100 साल के वृद्ध कबीर दास को अपना चेला बनने की सलाह दी। वैसे भी यदि ये बेई नदी जालन्धर की काली बेईं है तो कबीर दास जी के जीवन मे जालन्धर जाने का कोई वर्णन नही है।

इसी पृष्ठ पर यह भी लिखा है कि गुरू नानक देव जी सतयुग मे राजा अम्बरीष, त्रेता युग मे राजा जनक (सीता माता जी के पिता और श्रीराम जी के श्वसुर) और द्वापर मे ऋषि व्यास के पुत्र सुखदेव जी थे।

समीक्षा:- अब सबको विचार करना चाहिए कि रामपाल बेसिरपैर की हांकता है और खुद को तत्वदर्शी सन्त बताता है। न तो किसी भी पुस्तक मे ये गप्प है और न ही स्वयं गुरू नानक जी ने कहीं पर ये कहा है कि मै पिछले जन्म मे क्या था। सच तो ये है कि कबीर दास और गुरू नानक देव जी दोनो ने समाज मे फ़ैले हुए अन्धविश्वास के विरूद्ध बिगुल बजाया। अब कबीर के भक्तों की करतूत देखिए। सन्त कबीर जी को रामपाल किस्म के लोगों ने ईश्वर बना दिया।

गुरूग्रन्थ साहेब और रामपाल दास

जो रामपाल दास गुरू ग्रन्थ की का अर्थ नहीं कर सकता वह वेदों का अर्थ कैसे करेगा।

रामपाल दास अपनी वेबसाइट { **http://www.jagatgururampalji.org/shrigurugranthsahib.php** } विडियो और टी वी पर तथा अपनी पुस्तक ज्ञान गंगा (पृष्ठ71) तथा अध्यात्मिक ज्ञान गंगा (पृष्ठ 157) मे गुरू ग्रन्थ साहब का पेज 721 दिखा कर कहता है कि देखो यहाँ कबीर परमात्मा का नाम है. सच और झूठ का फैसला खुद करें
गुरू ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ 721 का विवरण दे रहा हूँ. यद्यपि इस पेज मे कबीर शब्द है परन्तु यंहा कबीर शब्द NOUN(संज्ञा=नाम) नहीं ADJECTIVE(विशेषण) है जिसका अर्थ महान /GREAT है. यदि

आप यही जिद्द करते है कि यहां कबीर शब्द का अर्थ परमात्मा कबीर है तो हका करीम बेऐब परवदगार भी परमात्मा हो जाएंगे . इस प्रकार 5 परमात्मा हो जाएंगे . यदि आप अनुवाद मे दोष निकालते हो तो ये गुरू ग्रन्थ साहिब का मानक अनुवाद है अँग्रेजी में दिए गए अनुवादों मे पहला अनुवाद डा सन्त सिंह खालसा और दूसरा भाई मनमोहन सिंह जी द्वारा किया गया है।
सभी अँग्रेजी अनुवाद http://www.srigranth.org के हैं।

ਰਾਗੁ ਤਿਲੰਗ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੧ रागु तिलंग महला १ घरु १ Raag Tilang, First Mehl, First House:
ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

हिन्दी अर्थ – ੴ =1 ॐकार, सति नामु= जिसका नाम सत्य है, करता= कर्ता/संसार को बनाने वाला, पुरूखु=परमपुरूष, निरभउ= निर्भय, निरवैरू = वैर रहित (अर्थात सब का मित्र), अकाल मूरति= अमरत्व का प्रतीक, अजुनी= जिसकी कोई योनि (जैसे मनुष्य/पशु/पक्षी/कीट आदि)नहीं है, सैभं= स्वयंभू , गुर प्रसादि = गुरू के समान कृपा करने वाला या गुरू की कृपा से।
1- One Universal Creator God. Truth Is The Name. Creative Being Personified. No Fear. No Hatred. Image Of The Undying. Beyond Birth. Self-Existent. By Guru's Grace:

2- There is but One God. True is His Name and creative His Personality. He is without fear, without enmity, Immortal in form, beyond birth and self-illumined By Guru's grace is He obtained.

ਯਕ ਅਰਜ ਗੁਫਤਮ ਪੇਸਿ ਤੋ ਦਰ ਗੋਸ ਕੁਨ ਕਰਤਾਰ ॥ यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥
1 I offer this one prayer to You; please listen to it, O Creator Lord.2- I utter One supplication before Thee. Hear is Thou, O my Creator.

ਹਕਾ ਕਬੀਰ ਕਰੀਮ ਤੂ ਬੇਐਬ ਪਰਵਦਗਾਰ ॥੧॥ हका ***कबीर*** करीम तू बेऐब परवदगार ॥१॥

1-You are true, ***great***, merciful and spotless, O Cherisher Lord. ||1||

2 Thou art the true, ***great***, merciful and faultless cherisher.

श्री नगेन्द्रनाथ वसु द्वारा सम्पादित हिन्दी विश्वकोश के चतुर्थ भाग के पृष्ठ 28 पर **कबीर** शब्द का अर्थ **लब्धप्रतिष्ठित और बड़ा** लिखा है। डा० रामशंकर शुक्ल रसाल द्वारा सम्पादित और राम नारायण लाल द्वारा इलाहबाद से 1951 मे प्रकाशित भाषा शब्द कोश के पृष्ठ 403 पर कबीर का अर्थ श्रेष्ठ लिखा है।

हका=सत्य स्वरूप, कबीर=महान, करीम=दयालु,बेएब=निष्पाप,परवरदगार=सबसे प्रेम करने वाला
यहां पर विचार करें कि गुरू नानक देव जी ने ईश्वर का नाम **1 ओंकार (ੴ)** कहा है और कबीर

करीम आदि उसके विशेषण कहे हैं। **यहां पर ईश्वर का एक विशेषण अजूनी लिखा है जिसका हिन्दी अर्थ है "किसी भी मनुष्य, पशु, पक्षी आदि की योनि मे जन्म न लेने वाला" और इंग्लिश में Beyond Birth कहा गया। सन्त कबीरदास जी तो 1398 मे में मानव योनि मे आए तो फ़िर वह परमात्मा कैसे हो सकते हैं?** फ़िर भी आप ये जिद्द करते हैं कि यहां पर कबीर का अर्थ कबीर परमात्मा है तो आगे देखो पृष्ठ 524 नीचे दिए गए विवरण में कबीर शब्द संज्ञा (Personal Noun = व्यक्तिवाचक संज्ञा) है अतः यहां पर कबीर शब्द से सन्त कबीर दास जी का ही बोध होता है। कबीर जी को ईश्वर नहीं मनुष्य थे ।

संत कबीर जी ईश्वर नहीं ईश्वरभक्त हैं। गुरू ग्रन्थ साहब// पेज 524

मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ॥ Kabeer's mother sobs, cries and bewails -

ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥१॥ O Lord, how will my child live? ||1||

तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ॥ Kabeer has given up all his spinning and weaving,

हरि का नामु लिखि लीओ सरीर ॥१॥ रहाउ ||and written the Name of the Lord on his body.

जब लगु तागा बाहउ बेही ॥ As long as I pass the thread through the bobbin,

||तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥२॥ I forget the Lord, my Beloved. ||2||

ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ My intellect is lowly - I am a weaver by birth,

हरि का नामु लहिओ मै लाहा ॥३॥ but I have earned the profit of the Name of the Lord. ||3||

कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ Says Kabeer, listen, O my mother -

हमरा इन का दाता एकु रघुराई ॥४॥२॥ the Lord alone is the Provider, for me and my child.

इससे साफ़ साफ़ पता चलता है कि कबीर जी स्वयं को रघुराई/हरि का भक्त बता रहे हैं

यहाँ पर परमेश्वर का नाम १ ओंकार कहा है । गुरुग्रंथ ओंकार का प्रयोग अनेक स्थानो पर हुआ है ।

ॐकार का अन्य स्थानो पर प्रयोग (गुरू ग्रन्थ 929-30)

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ओअंकारि ब्रहमा उतपति ॥ ॐकार से ब्रह्मा जी का जन्म होता है।

ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥ ब्रह्मा जी ने ॐकार को चितंन(मनन) किया।

ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥ ब्रह्मा जी ने ॐकार को चितंन(मनन) किया।

ओअंकारि सैल जुग भए ॥ ॐकार ने पर्वत बनाए।

ओअंकारि बेद निरमए ॥ ॐकार ने वेदों को बनाया अर्थात आदि सृष्टि मे मनुष्यो को वेद का ज्ञान दिया।

ओअंकारि सबदि उधरे ॥ ॐकार ने मनुष्य को वाणी दी।

ओअंकारि गुरमुखि तरे ॥ ॐकार को गुरू के उपदेश से जानकर मनुष्य संसार सागर से पार हो जाता है

ओनम अखर सुणहु बीचारु ॥ अक्षर (अ+क्षर)अर्थात नाश रहित ओम् को सुनो और विचार करो।

ओनम अखरु त्रिभवण सारु ॥१॥ ओम् अक्षर मे त्रिभुवन का सार है या ओम् अक्षर ज्ञान, कर्म और उपासना का सार है।

गुरू ग्रन्थ साहिब पृष्ठ 874॥

प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥ (प्रणव= ओम्) हरी अर्थात ईश्वर का नाम ओम् है।

योगदर्शन मे भी लिखा है- तस्य वाचकः प्रणवः (समाधिपाद सूत्र 27) उस ईश्वर का वाचक ओम् है। योगदर्शन पर भोजवृति मे भी प्रणव का अर्थ ओम ही लिखा है।

जासु जपत भै अपदा टरी ॥४॥१॥५॥ उस प्रणव अर्थात ॐ का जाप करने से आपदाएं दूर हो जाती हैं।

प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥५॥२॥६॥ परमात्मा का नाम प्रणव (ॐ) है यह गीता कहती है।

ओअंकार= ॐकार, ओनम=ओम्

केवल गुरू नानक देव जी ने ही नही क्रान्तिकारी सन्त कबीरदास जी ने भी ईश्वर को ओंकार नाम से सम्बोधित किया है । बीजक मे सन्त कबीर जी चौंतीसी से पहले लिखते हैं-

ॐकार आदिहि जो जाने । लिखिकै मेटि ताहि फ़िरि माने॥
वे ॐकार कहै सब कोई। जिनहुँ लखा सो विरला सोई।

*ॐकार आदिहि जो जाने =जो व्यक्ति ॐ (ओम्) को सृष्टि का रचने वाला जानता है, *लिखिकै मेटि = वह पूर्व जन्मों के बुरे संस्कारों को मिटा देता है। *ताहि फ़िरि माने= उसके बाद शुद्ध चित (मन) से ॐ को मानता है।* वे ॐकार कहै सब कोई =यद्यपि सब ॐ का उपदेश और जाप करते हैं, * जिनहुँ लखा सो विरला सोई =परन्तु कोई विरला योगी ही उस ॐ का आत्मा से साक्षात्कार करता है।

संस्कृत में भी ओम् को ॐकार लिखने की परम्परा है-
ॐकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।

इससे आगे ज्ञान गंगा के पृष्ठ 71 पर गुरू ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ 24 का निर्देशित करते हुए रामपाल दास कहता है कि देखो यहां पर परमात्मा को धाणक कहा गया है और धाणक अर्थात जुलाहा । पूर्ण परमात्मा कबीर जी जुलाहे थे । पूरा पढें और निर्णय करें।

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ ੧ ਘਰੁ ੪ ॥सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥

Siree Raag, First Mehl, Fourth House: (क) डा सन्त सिंह खालसा (ख़) भाई मनमोहन सिंह जी
ਏਕੁ ਸੁਆਨੁ ਦੁਇ ਸੁਆਨੀ ਨਾਲਿ ॥एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥
(क)-The dogs of greed are with me (ख) - I have a dog and two bitches with me.

ਭਲਕੇ ਭਉਕਹਿ ਸਦਾ ਬਇਆਲਿ ॥भलके भउकहि सदा बइआलि ॥ (क) In the early morning, they continually bark at the wind.(ख़) Early in the morn, they ever bark at the wind.

ਕੂੜੁ ਛੁਰਾ ਮੁਠਾ ਮੁਰਦਾਰੁ ॥कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु ॥ (क) Falsehood is my dagger; through deception, I eat the carcasses of the dead. (ख़) Falsehood is my dagger and to eat by defrauding is carrion

ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੧॥ <u>धाणक रूपि रहा करतार</u> ॥१॥ (क) ||1||I live as a wild hunter, O Creator! ||1| (ख) |I live in the form of a hunts man, O Creator!

ਮੈ ਪਤਿ ਕੀ ਪੰਦਿ ਨ ਕਰਣੀ ਕੀ ਕਾਰ ॥ मै पति की पंदि न करणी की कार ॥ (क) I have not followed good advice, nor have I done good deeds. (ख़) I follow not the counsel of my Spouse nor do I good deeds.

ਹਉ ਬਿਗੜੈ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਬਿਕਰਾਲ ॥ हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥ (क) I am deformed and horribly disfigured. (ख़) I appear deformed and terrible

ਤੇਰਾ ਏਕੁ ਨਾਮੁ ਤਾਰੇ ਸੰਸਾਰੁ ॥तेरा एकु नामु तारे संसारु ॥

(क) Your Name alone, Lord, saves the world. (ख़) Thy Name alone saves the world.

ਮੈ ਏਹਾ ਆਸ ਏਹੋ ਆਧਾਰੁ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥मै एहा आस एहो आधारु ॥१॥ रहाउ ॥

(क) This is my hope; this is my support. ||1||Pause|| (ख़) this alone is my hope and this is the mainstay. Pause.

ਮੁਖਿ ਨਿੰਦਾ ਆਖਾ ਦਿਨੁ ਰਾਤਿ ॥मुखि निंदा आखा दिनु राति ॥

(क) my mouth I speak slander, day and night. (ख़) With my mouth, I utter calumny day and night.

ਪਰ ਘਰੁ ਜੋਹੀ ਨੀਚ ਸਨਾਤਿ ॥पर घरु जोही नीच सनाति ॥ (क)I spy on the houses of others-I am such a wretched low-life!(ख़) I am base and a wretch and spy other's house.

ਕਾਮੁ ਕ੍ਰੋਧੁ ਤਨਿ ਵਸਹਿ ਚੰਡਾਲ ॥कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल ॥ (क) sexual desire and unresolved anger dwell in my body, like the outcasts who cremate the dead. (ख़) Lust and wrath, the pariahs, abide in my body.

ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੨॥धाणक रूपि रहा करतार ॥२॥

(क) I live as a wild hunter, O Creator! ||2|| (ख़) I live in the form of huntsman, O Creator!

ਫਾਹੀ ਸੁਰਤਿ ਮਲੂਕੀ ਵੇਸੁ ॥फाही सुरति मलूकी वेसु ॥ (क) I make plans to trap others, although I appear gentle. (ख़) I am gentle in appearance, but my intent is to entrap others.

ਹਉ ਠਗਵਾੜਾ ਠਗੀ ਦੇਸੁ ॥हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥

(क) I am a robber-I rob the world. (ख़) I am a cheat and cheat the country (world).

ਖਰਾ ਸਿਆਣਾ ਬਹੁਤਾ ਭਾਰੁ ॥खरा सिआणा बहुता भारु ॥ **(क) I am very clever-I carry loads of sin. (ख़) I am very clever and carry the great load of sin.**

ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੩॥धाणक रूपि रहा करतार ॥३॥ **(क)I live as a wild hunter, O Creator! ||3||(ख़) I live in the form of huntsman, O Creator!**

ਮੈ ਕੀਤਾ ਨ ਜਾਤਾ ਹਰਾਮਖੋਰੁ ॥मै कीता न जाता हरामखोरु ॥
(क) I have not appreciated what You have done for me, Lord; I take from others and exploit them. (ख़) I, a partaker of other's wealth, have not appreciated what Thou hast done for me.

ਹਉ ਕਿਆ ਮੁਹੁ ਦੇਸਾ ਦੁਸਟੁ ਚੋਰੁ ॥हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥ **(क) What face shall I show You, Lord? I am a sneak and a thief. (ख़) What face shall, I a villainous thief show Thee, O Lord?**

ਨਾਨਕੁ ਨੀਚੁ ਕਹੈ ਬੀਚਾਰੁ ॥नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ **(क) describes the state of the lowly. (ख़) Nanak the lowly state this thought.**
ਧਾਣਕ ਰੂਪਿ ਰਹਾ ਕਰਤਾਰ ॥੪॥੨੯॥धाणक रूपि रहा करतार ॥४॥२९॥
(क) I live as a wild hunter, O Creator! ||4||29||(ख़) I live in the form of huntsman, O Creator!

रामपाल अपनी वेबसाइट पर गुरू ग्रन्थ का पेज 24 दिखा कर कहता है कि देखो यहाँ पर **धाणक का अर्थ जुलाहा अर्थात कबीर पूर्ण परमात्मा है** .पेज 24 के अनुवाद पर कुछ पाठकों को एतराज हो सकता है कि यहां **"धाणक" शब्द का अर्थ कबीर ही** है. आइए विस्तार से जाने-
1. एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि = एक श्वान= कुत्ता (क्रोध) और दो श्वानी = कुतिया (वासना और लालच) .नालि= साथ ली
2भलके भउकहि सदा बइआलि = हवा चलने पर (विषय भोग सामने आने पर) सुबह से ही भौंकने लगते हैं.
3.कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु = झूठापन {FALSEHOOD} मेरा छुरा (शिकार का साधन) है और मुरदारू= मरा हुआ मेरा खाना है

भावार्थ ये है कि दुष्ट व्यक्ति मरे हुए के समान है.उनका साथ मुझे भोजन के समान सुख देता है
4.धाणक रूपि रहा करतार= करतार [O Creator] (हे ईश्वर) मेरा स्वरूप धाणक की तरह है.
एक कुत्ता,दो कुतिया और छुरा हाथ मे कौन रखता है= शिकारी
फिर भी यदि आप ये जिद्द रखते हैं कि यहां **धाणक का अर्थ कबीर** है तो क्या ये पंक्तियां कबीर जी पर लागू होंगी? इससे आगे की पंक्ति का भी विचार करें-
हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल- बिगडा हुआ विकराल रूप किसका होता है= कबीर या शिकारी?
हउ ठगवाड़ा ठगी देसु – ठग बन कर दुनिया को ठगता कौन है = कबीर ?
फाही सुरति मलूकी वेसु –अन्दर छल कपट और बाहर से साफ़ सुथरा = कबीर ?
कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल – शरीर मे कामवासना और क्रोध रूपी चण्डाल =कबीर ?
मुखि निंदा आखा दिनु राति – मुह से रात दिन दूसरों की बुराई= कबीर ?
खरा सिआणा बहुता भारु – बहुत अधिक चालाक होना और पापों के बोझ को ढोना= कबीर?

गुरू ग्रन्थ साहब के पृष्ठ 24 के अनुवाद को देकर मैने सिद्ध कर दिया है किसी भी हालत मे रामपाल और उसके अनुयायी गुरू ग्रन्थ मे कबीर को परमात्मा सिद्ध नही कर सकते.
इससे ये भी पता चल गया कि जिस रामपाल को पंजाबी का अनुवाद नहीं आता वह वेदों का क्या अनुवाद करेगा.

पृष्ठ 24 मे धाणक की विशेषताए हैं- कुत्ते रखना,छुरा रखना,मुर्दा खाना बिगडा हुआ विकराल रूप रखना. अन्दर छल कपट और बाहर से साफ़ सुथरा, शरीर मे कामवासना और क्रोध रूपी चण्डाल और मुह से रात दिन दूसरों की बुराई <u>{क्या आप ये विशेषताएं संत कबीर जी मे ढूंढ सकते है?}</u>

गुरू ग्रन्थ के कुछ और उदाहरणों से ये सिद्ध हो जाएगा कि जगदगुरू रामपाल झूठ बोल रहा है।
रामपाल दास ने एक “काल” नाम के मूर्खता पूर्ण शब्द को गढ लिया और अपने अनुयायिओं को मूर्ख बनाने के लिए कहा कि काल और ब्रह्म एक ही हैं । सन्त कबीरदास जी और गुरू नानक देव जी ने ब्रह्म और परमेश्वर को एक ही माना है। ब्रह्म के विषय में रामपाल दास की मान्यता से इन दोनो महापुरूषों की मान्यता पूरी तरह अलग है। अब ये निर्णय पाठ्कों को स्वयं करना चाहिए कि कौन सही है और कौन गलत । ***<u>कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु</u>*** ॥
पहले रामपाल दास की ब्रह्म शब्द व्याख़्या देखें (ज्ञान गंगा से)

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टी के एक ब्रह्मण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

ज्ञान ग़ंगा पृष्ठ 24

"ब्रह्म (काल) की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा"

सुक्ष्म वेद से शेष सष्टि रचना-------

तीनों पुत्रों की उत्पत्ति के पश्चात् ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकृति) से कहा मैं प्रतिज्ञा करता हुँ कि भविष्य में मैं किसी को अपने वास्तविक रूप में दर्शन नहीं दूंगा। जिस कारण से मैं अव्यक्त माना जाऊँगा। दुर्गा से कहा कि आप मेरा भेद किसी को मत देना। मैं गुप्त रहूँगा। दुर्गा ने पूछा कि क्या आप अपने पुत्रों को भी दर्शन नहीं दोगे? ब्रह्म ने कहा मैं अपने पुत्रों को तथा अन्य को किसी भी साधना से दर्शन नहीं

ज्ञान ग़ंगा पृष्ठ 27

अब रानी को तो चिंता बनी हुई थी। श्रद्धा से जाप कर रही थी। (कबीर साहेब) करूणामय साहेब का रूप बना कर गुरुदेव रूप में काल आया, आवाज लगाई इन्द्रमति, इन्द्रमति। अब उसको तो पहले ही डर था, नाम स्मरण किया। काल की तरफ नहीं देखा। दो मिनट के बाद जब देखा तो काल का स्वरूप बदल गया। काल का ज्यों का त्यों चेहरा दिखाई देने लगा। करूणामय साहेब का स्वरूप नहीं रहा। जब काल ने देखा कि तेरा तो स्वरूप बदल गया। वह जान गया कि इसके पास कोई शक्ति युक्त मंत्र है। यह कहकर चला गया कि तुझे फिर देखूँगा। अब तो बच गई।

ज्ञान गंगा पृष्ठ 99

अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 227

''परमेश्वर कबीर जी से काल ब्रह्म का विवाद करना''

हे धर्मदास् काल ब्रह्म आहार करने के लिए तप्तशिला की ओर चला। तब मैंने उन सर्व प्राणियों से कहा देखिए वह आ रहा है काल ब्रह्म साकार है, जिसे आप निराकार कहा करते। तेजोमय शरीर छोटा माथा लम्बे दांत डरावनी सूरत है। हे प्राणियों! अब आप जाओ। इतना कहते ही सर्व प्राणी जो तप्तशिला पर उपस्थित थे आकाश में उड़ गए तथा धर्मराज के दरबार में आ गए। वहाँ से कर्माधार से स्वर्ग-नरक या किसी प्राणी के शरीर में भेज दिया जाता है।

हे धर्मदास! जब काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप्त शिला के निकट आया। उस समय उसको मेरा स्वरूप मेरे उस पुत्र योगसन्तायन उर्फ योगजीत का दिखाई दिया जिस रूप में मैंने काल ब्रह्म को सतलोक से निष्काशित किया था तथा मुझे योगजीत जान कर क्रोधित होकर बोला हे योगजीत यहाँ मेरे लोक में मेरी आज्ञा के बिना किसलिए आया। आज मैं तुझे मारूंगा, तेरी जीवन लीला समाप्त करूंगा। तुने मुझे सत्यलोक से धक्के मार कर निकाला था। मैंने तेरे से बहुत विनय की थी सत्यलोक से न निकालने की परन्तु तूने एक नहीं सुनी थी। क्या आप पिता जी का (सत्यपुरूष का) कोई संदेश-आदेश लेकर आए हो वह मुझे बताइए तत्पश्चात् युद्ध के लिए तैयार हो जाइए। (मैंने

अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 227

हे धर्मदास! मेरी बातें सुन कर काल ब्रह्म अत्यन्त क्रोधित हो गया तथा मुझे समाप्त् करने के उद्देश्य से मेरे ऊपर आक्रमण किया। मैंने सतनाम का सुमरण किया जिसके प्रभाव से काल ब्रह्म नीचे पाताल लोक में गिर गया। भयभीत होकर कांपने लगा उसकी स्थिति ऐसी हो गई जैसे पक्षी के पंख कट जाते हैं वह एक स्थान पर गिरा फड़फड़ाता है परन्तु उड़ नहीं पाता। मैं भी उसके साथ पाताल लोक में पहुँच गया। काल ब्रह्म ने जान लिया कि योगजीत के पास शक्तिशाली सिद्धि है ये मेरे से मारा नहीं जा सकता। तब उस (काल ब्रह्म) ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने की अन्य युक्ति सोची। उसने कहा हे योगजीत आप मेरे बड़े भाई हो मैं आप का छोटा भाई हूँ। छोटे तो उत्पात ही किया करते हैं परन्तु बड़ों का बडप्पन क्षमा करने में ही होता है। मुझे क्षमा करो यह कहते हुए काल

ब्रह्म घिसड़ता हुआ मेरे अति निकट आया तथा मेरे चरण पकड़ कर गिड़गड़ाने लगा। मैं उसको लेकर फिर इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में तप्त शिला के पास ले आया। मैंने कहा हे काल निरंजन ! मैंने तुझे क्षमा कर दिया मेरे पैर छोड़ मैंने नीचे के लोकों में जाना है तथा सर्व आत्माओं को तेरे जाल से मुक्त **कराना है। अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 241**

यहां पर रामपाल ने बेतुकी कहानी लिखने मे शेखचिल्ली को भी पीछे छोड़ दिया है। यहां काल को "ब्रह्म" भी कह रहा है और छोटा माथा, लम्बे दांत और डरावनी सूरत वाला भी कह रहा है। यहां पर हैरानी होती है कि कबीर परमात्मा ने काल को जेल मे क्यों नहीं बन्द कर दिया? गुरू नानक जी ने, सन्त कबीर जी ने, वेदों और उपनिषदों मे ब्रह्म को निराकार, सर्वव्यापक परमात्मा बताया है। वेदों का उपदेश करने वाला ईश्वर (ब्रह्म) काल नहीं है। यहां पर काल को शरीर वाला और चेहरे वाला कहा गया है परन्तु वेदों मे,उपनिषदों मे ब्रह्म को निराकार और सर्वव्यापक बताया गया है- उदाहरण के लिए- "ओम खं ब्रह्म" –यजुर्वेद 40/17 वह ब्रह्म आकाश की तरह सर्वव्यापक है। ईशोपनिषद के पहले मन्त्र में भी ईश्वर को संसार मे सर्वव्यापक बताया

गया है।वेद मे ईश्वर को “अकाय” अर्थात शरीर रहित कहा गया है। इसलिए रामपाल का बताया हुआ काल वेदों का ब्रह्म नही है।यहां पर रामपाल दास की समझदारी का एक और परिचय मिलता है । एक ही पुस्तक ज्ञान गंगा में पृष्ठ (27) मे काल किसी को भी अपना दर्शन न देने की प्रतिज्ञा करता है तो पृष्ठ 99 पर रानी इन्द्रमति को दर्शन देता है।

“मैने सतनाम का सुमरण किया” रामपाल के अनुसार जब कबीर स्वयं पूर्ण परमात्मा है तो उसे सतनाम का सुमरण करने की क्या जरूरत है ? जब सतनाम का सुमरण करने सेकाल पाताल मे गिर जाता है तो क्या रामपाल के दिखाए गए सारे चित्र झूठें है? जो काल का लोक विवरण देते हैं । क्या परमात्मा कबीर मूर्ख था कि पाताल मे गिरे हुए काल को उठा कर तप्त शिला पर डाला। यदि कबीर परमात्मा का पुत्र (योगजीत या योगसन्तायन) है तो परमात्मा की पत्नी भी होगी क्योंकि बिना मां के तो बेटा कैसे पैदा होगा? जैसे हम देखते हैं कि पशु (हाथी/शेर), पक्षी और मनुष्य मे मादा नर के समान होती है उसी तरह परमात्मा कबीर की पत्नी भी कबीर के समान शक्तिशाली होगी। परन्तु रामपाल ने तो कभी भी परमात्मा कबीर की पत्नी की कोइ जानकारी नही दी है। इसका मतलब तो यह हुआ कि या तो रामपाल सतलोक मे नही गया है या तत्वदर्शी सन्त नही है। पाठक विचार करें।

आगे जाने गुरू नानक देव जी की ब्रह्म शब्द की व्याख्या- (गुरू ग्रन्थ पृष्ठ 13)

इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रह्म गिआनी ॥ ब्रह्म गिआनी = परमात्मा को जानने वाला
This world is engrossed in corruption and cynicism. Only those who know God are saved.

जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥
Only those who are awakened by the Lord to drink in this Sublime Essence, come to know the Unspoken Speech of the Lord. ||2||

जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥
Purchase only that for which you have come into the world, and through the Guru, the Lord shall dwell within your mind

निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥
Within the home of your own inner being, you shall obtain the Mansion of the Lord's Presence with intuitive ease. You shall not be consigned again to the wheel of reincarnation. ||3||

अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ अंतर्यामी।
O Inner-knower, Searcher of Hearts, O Primal Being, Architect of Destiny: please fulfill this yearning of my mind.*अंतरजामी= अन्तरयामी *पुरख= पुरूष (परमात्मा) * विधाते= विधाता, *सरधा=श्रद्धा

नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥
Nanak, Your slave, begs for this happiness: let me be the dust of the feet of the Saints. ।

इस पद्य मे गुरू नानक देव जी उपदेश देते हैं कि सन्तों की सेवा करो और हरि (ईश्वर) के नाम का लाभ जोडो क्योंकि जीवन धीरे धीरे से कम हो रहा है । गुरू से मिल कर अपना कर्तव्य जान लो । विकार और संशय से भरे हुए संसार रूपी सागर को केवल ब्रह्मज्ञानी (ब्रह्म=परमात्मा को जानने वाला) ही पार कर सकता है।

रामपाल अपने प्रवचनों मे मे कहता है की गुरु नानक देव जी भी कबीर को ही परमात्मा मानते थे। आइए गुरुनानक जी के ईश्वर विषयक विचार जाने -
गुरू ग्रन्थ पृष्ठ 293-294

सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥ ईश्वर सबके बाहर और भीतर है।
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥ ईश्वर घाट घाट मे व्यापक है ।
धरनि माहि आकास पइआल ॥ धरती मे, आकाश में, पाताल मे, सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥ और सब लोकों अर्थात स्थानों मे सबका प्रेम पूर्वक पालन करने वाले ईश्वर से परिपूर्ण हैं।
बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥ वह परब्रह्म अर्थात ईश्वर वनों मे, मैदानो मे और पर्वतों मे व्याप्त है । जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ जैसी ईश्वर की आज्ञा है वैसे ही कर्म करो।
पउण पाणी बैसंतर माहि ॥ वह परमात्मा पवन और पानी मे व्यापक है ।
चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥ चारों कोणों मे और दस दिशाओं मे ईश्वर समाया हुआ है।
तिस ते भिंन नही को ठाउ ॥ उस ईश्वर से रहित कोइ भी स्थान नही है।
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥ गुरू की कृपा से नानक ने सुख और शान्ति को पाया।

जगदगुरू रामपालदास जान बूझ कर या अज्ञानता के कारण शब्दों के मनमाने अर्थ करता है । रामपाल दास हर स्थान पर ब्रह्म और काल को एक बताता है । परन्तु गुरू ग्रन्थ के विशेषज्ञ दोनो को को अलग अलग मानते हैं। http://www.sikhiwiki.org/index.php/Gurmukhi_to_English#D

ਬ੍ਰਹਮ --ब्रह्म--brahm --Absolute Lord, One who created the world

ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ -- ब्रह्म गिआनी--brahm giaanee -God-conscious person, in tune with God

(Brahm-created the world, giani-one with wisdom/knowledge)

ਕਾਲ -काल--kaal -death, time

इसी तरह का एक और उदाहरण (गुरू ग्रन्थ पृष्ठ 67)

नामा छीबा कबीरु जोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥

अर्थात कपड़े को छापने वाले नामदेव (नामदेव जी महाराष्ट्र के सन्त हुए हैं। उनका परिवारिक कार्य कपड़ों पर छपाइ करना था। हिन्दी मे इसे "छीपा" या "छिप्पी" कहा जाता है।) और कपड़े बुनने वाले कबीर (सन्त कबीर जी) ने गुरू के उपदेश से श्रेष्ठ गति= मुक्ति प्राप्त की।

Nam Dev, the calico-printer and Kabir, the weaver, obtained salvation from the perfect Guru.

ब्रहम के बेते सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई ॥

अर्थात सन्त कबीर और सन्त नामदेव जी ने ब्रह्म अर्थात ईश्वर के ज्ञान को जानकर अहंकार और जाति की परम्परा को छोड़ दिया। अर्थात कबीर जी और नामदेव जी ने वह कार्य (गुरू से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना) किया जो उनकी जाति मे नहीं होता था। यहां ब्रह्म का अर्थ काल नही है।

Those who know God and recognize His Shabad lose their ego and class consciousness.

संत कबीरदास जी ने भी ईश्वर को ब्रह्म कहा है काल नहीं। (गुरू ग्रन्थ 1373)

कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु ॥

Kabeer, my mind is cooled and soothed; I have become God-conscious.

सन्त कबीर दास जी कहते हैं कि ब्रह्मज्ञान को पाकर वैसे मन का सन्ताप दूर हो गया और शीतलता (शान्ति) प्राप्त हो गई ।

जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि ॥१७५॥ The fire which has burnt the world is like water to the Lord's humble servant. ||175|| जैसे बुराई और स्वार्थ की आग से जल रहे संसार में श्रेष्ठ मनुष्य (सु =अच्छा, जन= मनुष्य) उदक (पानी) के समान हैं। यहां पर साफ़ साफ़ पता चल रहा है कि सन्त कबीर जी ब्रह्म ज्ञान को शान्ति देने वाला बताते है परन्तु रामपाल ब्रह्म को काल बता कर उसे बदनाम कर रहा है।

सन्त कबीर की यह वाणी अन्य स्थानो जैसे कबीर ग्रन्थावली मे भी समान रूप से मिलती है परन्तु आसानी से ढूंढने के लिए गुरू ग्रन्थ के पते दिए हैं।

कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ ॥

Kabeer, no one knows the Play of the Creator Lord. सिरजनहार= सृष्टि का सृजन (निर्माण) करने वाला। यहां पर कबीर जी ब्रह्म अर्थात ईश्वर को सृष्टि का सृजन (निर्माण) करने वाला बता रहे हैं

कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ ॥१७६॥

Only the Lord Himself and the slaves at His Court understand it. ||176||

दूसरा उदाहरण- गुरू ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 324

गरभ वास महि कुलु नही जाती

In the dwelling of the womb, there is no ancestry or social status.

ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥

All have originated from the Seed of God. ||1||

सभी की उत्पत्ति ब्रह्म अर्थात ईश्वर से होती है काल से नही। यहां पर कबीर जी ने ब्रह्म को सबका पिता बताया है । यहां पर ब्रह्म का अर्थ काल नही हो सकता।

कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥

Tell me, O Pandit, O religious scholar: since when have you been a Brahmin?

बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥ रहाउ ॥

Don't waste your life by continually claiming to be a Brahmin. ||1||Pause||

कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥

Says Kabeer, one who contemplates God,

सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥४॥७॥ is said to be a Brahmin among us.

गुरूग्रन्थ साहेब के पृष्ठ 1373 और 324 के विवरण से पाठक समझ गए होंगे कि कबीर जी का ब्रह्म और रामपाल दास का काल दोनो एक दूसरे से अलग हैं। कबीर जी ब्रह्म को वेदों की तरह ही सृष्टि निर्माण करने वाला मानते है।

संत कबीर जी का निजमत –

कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै ॥ गुरु ग्रंथ पृष्ठ 326॥ कहै कबीर निरंजन धिआवउ ॥ पृष्ठ 327॥ कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥ पृष्ठ 331॥ कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ॥ पृष्ठ 328॥ कहि कबीर राम नाम पछाना ॥ पृष्ठ 330॥

रामपाल दास के अनुयायिओं को चाहिए कि रामपाल दास की बात को न मान कर स्वयं कबीर जी की बात को माने।

कवि कविर कबीर

जगदगुरू रामपाल दास अपनी पुस्त्कों और प्रवचनों मे कहता रहता है कि देखो वेदों में भी पूर्ण परमात्मा कबीर का नाम है। जगदगुरू रामपाल वेद मे अनेक कविः शब्द दिखा कर कहता है कि देखो यहां कविर का अर्थ है पूर्ण परमात्मा कबीर। किसी भी हिन्दी/संस्कृत के शब्दकोश न तो कविर शब्द है और न ही कवि का अर्थ कबीर है। यदि आपने विद्यालय में हिन्दी/ संस्कृत व्याकरण मे सन्धि विषय पढा हो तो आपको याद होगा कि-
दिन+ईश=दिनेश,प्रति+एक=प्रत्येक,नाम+अंकन=नामांकन,कविः+मनीषी=कविर्मनिषी

इस प्रकार कविः के सामने कोइ व्यंजन से शुरू होने वाला शब्द आता है तो विसर्ग "अः" "र्" मे बदल जाता है परन्तु शब्द कवि ही रहता है कविर/कवीर/कबीर नहीं होता। यहां पर जगदगुरू रामपाल यजुर्वेद 36/1 के मन्त्र "ऋचं वाचं प्र पद्ये , मनो यजुः प्र पद्ये" दिखा कर कहता है कि देखो जिस तरह यहां यजुः का अर्थ यजुर्वेद किया गया है उसी तरह कवि का अर्थ कविर=कबीर=पूर्ण परमात्मा है। वेद तथा उपनिषद यजुः का अर्थ यजुर्वेद सभी विद्वान स्वीकार करते है परन्तु कवि का अर्थ कविर या कबीर कोइ भी हिन्दी या संस्कृत लेखक नही लिखता। रामपाल अपने विडियो मे कहता है कि जैसे यजु का अर्थ यजुर्वेद किया जा सकता है वैसे कवि का अर्थ कबीर किया जा सकता है . यजुः+वेद=यजुर्वेद 1.प्राचीन भाष्यकार सायण ने इस मन्त्र के भाष्य में ऋगवेद,यजुर्वेद और सामवेद किया है.2 आचार्य श्रीराम शर्मा [शान्ति कुंज हरिद्वार के संस्थापक] ने अपने वेद के अनुवाद में यजु का अर्थ यजुर्वेद किया है. आचार्य श्रीराम शर्मा जी आर्यसमाज से सम्बन्धित नहीं थे. 3 मन्त्र मे आए शब्दो की संगति- ऋचः अर्थात ऋक यजु साम शब्दों वेद शब्द की संगति लगती है.

इस प्रक्रिया को संस्कृत मे प्रतीक प्रक्रिया या प्रतीक,हिन्दी मे निर्देशक शब्द् और ENGLISH में Reference word कहते हैं.यह प्रक्रिया वेद और अन्य संस्कृत ग्रन्थों मे अपनाई गई है. उदाहरण के लिए यजुर्वेद के अध्याय 32 मन्त्र 3 को देखिये-{हिरण्यगर्भ इत्येषः।मा मा हिंसीदित्येषा} यहाँ पर हिरण्यगर्भ शब्द [हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे- यजु0 13/1] का प्रतीक है. यहां पर32/3 मे कहा गया है कि उस परमात्मा के समकक्ष कोई भी नही है जिसका वर्णन 13/1 मे किया गया है ।

यह प्रक्रिया संस्कृत के अन्य ग्रन्थों मे भी अपनाई गई है। आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ चरक संहिता मे भी प्रतीक प्रक्रिया का प्रयोग मिलता है.[चिकित्सा स्थान अध्याय 16 पाण्डु रोग] मे श्लोक 43 मे लिखा है कि {पंचगव्यं महातिक्तं कल्याणकमथापि वा} यदि कोश मे इसका अर्थ देखें

,

सह पञ्चदशाहानि नाशाथ हैनमुपससाद किं ब्रवीमि भो इत्यृचः सोम्य यजूꣳषि सामानीति स होवाच न वै मा प्रतिभान्ति भो इति ॥ २ ॥

सह Saha, he, Śvetaketu. पञ्चदश अहानि Pañchadaśa-ahâni, for fifteen days. न Na, not. आश Âṣa, took food. अथ Atha, then. ह Ha, indeed. एनम् Enam, to him, to his father. उपससाद Upasasâda, approached. किम् Kim, what. ब्रवीमि Bravîmi, shall I speak, shall I recite. भोः Bhoh, O Sir. इति Iti, thus. ऋचः Ṛichaḥ, the Ṛig Veda verses. सोम्य Somya, O' child. यजूंषि Yajûṁśi, the Yajur Veda verses. सामानि Sâmâni, the Sama Veda verses. इति Iti, thus. स Sa, he (Śvetaketu). ह Ha, indeed. उवाच Uvâcha, he said. न Na, not. वै Vai, verily. मां Ma, to me. प्रतिभान्ति Pratibhânti, occur to my memory. भो Bhoh, oh, इति Iti, thus.

{ - -

शतपथ ब्राह्मण} इसलिए यहां पर यजुः का अर्थ दोनो विधि से हो सकता है परन्तु कवि का अर्थ कबीर किसी भी तरीके से नहीं हो सकता है। कविर शब्द रामपाल ने अपनी या तो मनमर्जी से बनाया है या किसी मूर्ख से उधार लिया है।संस्कृत मे कवि शब्द जब भी ईश्वर के लिए प्रयोग होता है तो उसका अर्थ सर्वज्ञ या क्रान्तदर्शी होता है कबीर नहीं । कविर शब्द तो संस्कृत के किसी भी ग्रन्थ या शब्दकोश मे नहीं है।बंगाल प्रान्त मे वैद्य को कविराज बोला जाता है । तो क्या रामपाल बंगाल के वैद्यों को भी पूर्ण परमात्मा कहेगा?

कवि शब्द को विस्तार से जानने के लिए गीता के (अध्याय 8 श्लोक 9) की पुरानी व्याख्याएं जैसे शंकराचार्य, आनन्दगिरी, रामानुजाचार्य और नीलकंठ जी की टीका (explanation) । ये सब की सब टीकाएं 1000 वर्ष से अधिक पुरानी हैं। किसी भी टीकाकार ने "कवि" का अर्थ का अर्थ कविर्देव य कबीर नहीं किया है।सभी टीकाकारों ने कवि शब्द का अर्थ "सर्वज्ञ,क्रान्तदर्शी" किया है।यदि कोइ ये कहता है कि 1000 साल पहले कबीर जी नहीं हुए थे इसलिए कवि का अर्थ कबीर नहीं किया गया है तो 5000 साल पुरानी गीता और अत्यन्त प्राचीन वेदों मे कबीर का नाम ढूढना क्या मूर्खता नहीं होगी। आइये जाने कि संस्कृत के विद्वानो ने कवि का क्या अर्थ किया है। ध्यान से पढें और जाने कि यहां पर कवि का अर्थ कबीर नही हो सकता क्योंकि यहां पर "अणोरणीयां" का अर्थ सूक्ष्म से भी सूक्ष्म,आकाश से भी सूक्ष्म और जीवात्मा से भी सूक्ष्म बताया गया है मनुष्य जैसा कबीर परमात्मा नहीं

पहले रामपाल दास द्वारा कवि शब्द शब्द की व्याख्या – भगवद् गीता अध्याय 8 श्लोक 9

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ९॥

अनुवाद : (कविम्) कविर्देव, अर्थात् कबीर परमेश्वर जो कवि रूप में प्रसिद्ध होता है वह (पुराणम्) अनादि, (अनुशासितारम्) सबके नियन्ता (अणोः, अणीयांसम्) सूक्ष्मसे भी अति सूक्ष्म, (सर्वस्य) सबके (धातारम्) धारण–पोषण करने वाला (अचिन्त्यरूपम्) अचिन्त्य–स्वरूप (आदित्यवर्णम्) सूर्यके सदृश नित्य प्रकाशमान है (यः) जो साधक (तमसः) उस अज्ञानरूप अंधकारसे (परस्तात्) अति परे सच्चिदानन्दघन परमेश्वरका (अनुस्मरेत्) सुमरण करता है। (9)

केवल हिन्दी अनुवाद : कविर्देव, अर्थात् कबीर परमेश्वर जो कवि रूप से प्रसिद्ध होता है वह अनादि, सबके नियन्ता सूक्ष्मसे भी अति सूक्ष्म, सबके धारण-पोषण करनेवाले अचिन्त्य-स्वरूप सूर्यके सदृश नित्य प्रकाशमान है। जो उस अज्ञानरूप अंधकारसे अति परे सच्चिदानन्दघन परमेश्वरका सुमरण करता है। (9) गहरी नजर में गीता 3 पृष्ठ 314

इस श्लोक पर महाविद्वान आदि शंकराचार्य जी भाष्य ।

१ शां. भा.— किंविशिष्टं च पुरुषं याति ? इत्युच्यते– कविं क्रान्तदर्शिनं सर्वज्ञं, पुराणं चिरन्तनं, अनुशासितारं सर्वस्य जगतः प्रशासितारं, अणोः सूक्ष्मादप्यणीयांसं सूक्ष्मतरं अनुस्मरेदनुचिन्तयेद्यः कश्चित्, सर्वस्य कर्मफलजातस्य धातारं विधातारं विचित्रतया प्राणिभ्यो विभक्तारं विभज्य दातारमचिन्त्यरूपं नास्य रूपं नियतं विद्यमानमपि केनचिच्चिन्तयितुं शक्यत इत्यचिन्त्यरूपः, तमादित्यवर्णमादित्यस्येव नित्यचैतन्यप्रकाशो वर्णो यस्य तमादित्यवर्णं तमसः परस्तादज्ञानलक्षणान्मोहान्धकारात्परं तं 'अनुचिन्तयन्' यातीति पूर्वेणैव सम्बन्धः ॥ ९ ॥

हिन्दी मे—यहाँ पर किस विशिष्ट पुरुष का वर्णन है। कहा गया है – कवि = क्रान्तदर्शी सर्वज्ञ, पुराणम = चिरन्तन, शाश्वत, अनुशासितारम = सब जगत पर शासन करने वाला, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, का चिंतन करो। सबके कर्मफल के अनसार धारण करने वाला, विशेष रूप से सबको धारण करने वाला, अचिंत्य रूपं – जिसका कोई रूप नहीं है उसका चिंतन किस तरह किया जा सकता है इसलिए वह परमात्मा अचिन्त्यरूप है। तम अर्थात अज्ञान और मोह के अंधकार से अत्यंत परे, आदित्य वर्णम =ज्ञान स्वरूप

ये विवरण से पाठकों को पता चला गया होगा की परमात्मा सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है सर्वज्ञ है इसलिए दो हाथ, पैर, आंखो, कानो वाला कबीर परमात्मा नहीं हो सकता।

नीलकण्ठ जी की भावदीप टीका (नीलकण्ठ जी ने सम्पूर्ण महाभारत पर टीका लिखी है।)

तदेवमुपासनायाः स्वरूपमुक्त्वा उपास्यस्य स्वरूपमाह— कविमिति । कविं क्रान्तदर्शिनं, सर्वज्ञं, पुराणं चिरन्तनं, अनुशासितारं जगतोऽन्तर्यामिणं, अणोः सूक्ष्मादप्याकाशादेरणीयांसं सूक्ष्मतरं, योऽनुस्मरेत् अनुचिन्तयेत् । सर्वस्य कर्मफलस्य धातारं विभागेन प्रदातारम् । अचिन्त्यरूपं नास्य रूपं विद्यमानमपि केनचिच्चिन्तयितुं शक्यम् । आदित्यवर्णं आदित्यस्येव नित्यप्रकाशरूपो वर्णो दीप्यमानता यस्य तं आदित्यवर्णं, सर्वजगदवभासकमित्यर्थः । तमसो देहेन्द्रियादावनात्मन्यात्माभिमानरूपाविद्यातः परस्तात् पराचीनं; सति देहाभिमाने न प्रकाशते, योगयुक्त्या त्यक्ते तु तस्मिन् स्वयमेव प्रकाशत इत्यर्थः ॥ ९ ॥

रामानुजाचार्य भाष्य(सन 1017 से 1137)

२ रा. भा.— कविं सर्वज्ञं, पुराणं पुरातनम् , अनुशासितारं विश्वस्य प्रशासितारम् , अणोरणीयांसं जीवादपि सूक्ष्मतरं, सर्वस्य धातारं सर्वस्य स्रष्टारम् , अचिन्त्यरूपं सकलेतरविसजातीयस्वरूपम् , आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् अप्राकृतस्वासाधारणदिव्यरूपं, तमेवम्भूतमहरहरभ्यस्यमानभक्तियुक्तयोगबलेनारूढसंस्कारतया अचलेन मनसा प्रयाणकाले भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य संस्थाप्य, तत्र भ्रूमध्ये दिव्यं पुरुषं योऽनुस्मरेत् , स तमेवोपैति तद्भावं याति; तत्समानैश्वर्यो भवतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥

संस्कृत मे कवि शब्द के अनेक अर्थ हैं परन्तु कबीर अर्थ कहीं पर भी नहीं लगता । उपर आपने गीता मे कवि का अर्थ सर्वज्ञ और क्रान्तदर्शी जाना।

प्रकरण के अनुसार कवि शब्द का अर्थ "शुक्र ग्रह" भी प्रयोग किया जाता है।

भूमेपिण्ड शशांक ज्ञ कवि रवि कुजे ज्यार्कि नक्षत्र कक्षा ।
वृतैर्वृत्तो वृत सन्मृदनिल सलिल व्योम तेजो मयोऽयम॥
नान्याधारः स्वशक्यैव वियति नियतं तिष्ठति हाम्य पृष्ठे।
निष्ठं विश्वं च शश्वत् सदनुज मनुजादित्य दैत्यं समन्तात॥ सिद्धांत शिरोमणि- गोलाध्याय

मिट्टी, वायु, जल, व्योम(वायुमण्डल) और तेज (गर्मी) से युक्त यह भूमि पिण्ड गोलाकार है।चन्द्र, बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनि और नक्षत्रों से घिरि हुई किसी के आधार पर नहीं किन्तु अपनी शक्ति पर आकाश में स्थित है। इसके पृष्ठ (सतह) पर देवता (श्रेष्ठ मनुष्य), दानव (दुष्ट मनुष्य) और मनुष्य (सामान्य) स्थित हैं। **यहां पर कवि का अर्थ शुक्र ग्रह है पूर्ण परमात्मा कबीर नहीं**। हिंदी तक शुद्ध नहीं पढ़ पाने की योग्यता रखने वाले पाखंडी रामपाल ने स्वामी दयानंद पर अनुचित आक्षेप लगाया हैं की

रामपाल का गीता ज्ञान

एक स्थान पर रामपाल लिखता है कि महर्षि दयानन्द को श्रीमद्भगवत्गीता का भी ज्ञान नहीं था फोटो कापी में लिखे व वृतान्त से सिद्ध है कि महर्षि दयानंद का अध्यात्मिक ज्ञान शून्य था। प्रकरण इस प्रकार है। एक रामगोपाल वैश्य जो वेदान्ती था। उस ने बहुत सी टीकायें (अनुवाद) गीता की देखी। गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में ''व्रज'' शब्द है श्लोक 66:-

सर्वधमान् परित्यज्य माम् एकम् शरणं व्रज,

अहम् त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः

स्वामी जी (महर्षि दयानन्द) ने कहा (उत्तर) दिया:-

''शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्'' इस वार्तिक से वकार के अकार के आगे (परे जो) अकार रहा उसको तद्रूप हो गया अर्थात् वह शब्द

धर्म ही रहा परन्तु वास्तव में अधर्म है; अर्थ अधर्म होगा।

यह उत्तर दिया उस अज्ञानी महर्षि दयानन्द ने। लेखक ने लिखा है कि इस उत्तर को सुनकर रामगोपाल वैश्य बहुत प्रसन्न हुआ और (उसने) फिर पूछा कि कोई प्रमाण भी है ?

स्वामी जी (महर्षि दयानन्द) ने ऋग्वेद की दो-तीन श्रुतियों के प्रमाण दिये।

यह समझो की प्रमाण के रूप में ऋग्वेद के दो तीन मंत्र सुना दिए। जिस प्रकार सातवीं कक्षा के विद्यार्थी ने एक अंग्रेज यात्री के रास्ता पूछने पर अंग्रेजी भाषा में उत्तर देना गर्व की बात जान कर छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र (sick leave application) सुना दी। अंगे्रज माथे में हाथ मार कर चला गया। यह सोच कर कि इस मूर्ख ने क्या उत्तर दिया। मैंने जानना चाहा था मार्ग और यह सुना रहा है अंग्रेजी में छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र। महर्षि दयानन्द अज्ञानी ने ऐसा समाधान किया।

समीक्षा :-

उल्लू को दिन में भी न दिखे तो यह सूर्य का दोष नहीं हैं। मुर्ख को यह भी नहीं पता की स्वामी दयानंद से पहले आदि गुरु शंकराचार्य ने अपने गीता के भाष्य में इस श्लोक का क्या अर्थ किया हैं।

१ शां. भा.— कर्मयोगनिष्ठायाः परमरहस्यमीश्वरशरणतामुपसंहृत्य, अथेदानीं कर्मयोगनिष्ठाफलं सम्यग्दर्शनं सर्ववेदान्तसारविहितं वक्तव्यमित्याह— सर्वेति । सर्वधर्मान् सर्वे च ते धर्माश्च सर्वधर्मास्तान् । धर्मशब्देनात्राधर्मोऽपि गृह्यते, नैष्कर्म्यस्य विवक्षितत्वात् "नाविरतो दुश्चरितात्" [कठो. २।२४] 'त्यज धर्ममधर्मं च' [म. भा. १२।३२९।४०+३३१।४४+सन्यासो.२।१२] इत्यादिश्रुतिस्मृतिभ्यः। सर्वधर्मान्परित्यज्य सन्यस्य सर्वकर्माणीत्येतत् । मामेकं सर्वात्मानं समं सर्वभूतस्थमीश्वरमच्युतं गर्भजन्मजरामरणविवर्जितं 'अहमेव' इत्येवमेकं शरणं व्रज; न मत्तोऽन्यदस्तीत्यवधारयेत्यर्थः। अहं त्वा त्वामेवंनिश्चितबुद्धिं सर्वपापेभ्यः सर्वधर्माधर्मबन्धनरूपेभ्यो मोक्षयिष्यामि स्वात्मभावप्रकाशीकरणेन । उक्तं च— 'नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता' [१०।११] इति । अतो मा शुचः शोकं मा कार्षीरित्यर्थः ॥ ६६ ॥

शंकराचार्य गीता भाष्य

मुर्ख रामपाल जिसको हिंदी तक तो ठीक से पढ़नी नहीं आती वह संस्कृत का महापंडित स्वामी दयानंद द्वारा बताई गई शंका के समाधान में कमी निकालने का दुस्साहस करता हैं। वह कुछ ऐसा हैं जैसे विधवा बाँझ के बालक जन्म ले।यहां पर संस्कृत के महाविद्वान श्री शंकराचार्य जी भी लिख रहे हैं- "धर्मशब्देनात्राधर्मोऽपि गृह्यते" अर्थात धर्म शब्द से यहां पर अधर्म भी स्वीकार किया जाता है। अब ये निर्णय हो जाए कि गीता और संस्कृत रामपाल और रामपाल के चेलों को तो बिल्कुल भी नहीं आती। जैसे चोर को सब चोर नजर आते हैं वैसे ही रामपाल को सब संस्कृत ज्ञान शून्य नजर आते हैं। आगे भी पढें- "नाविरतो दुश्चरिता" अर्थात जो दुश्चरित= अधर्म= बुरे चरित्र = पाप आचरण= बुरी आदतों से दूर नही है वह ईश्वर की शरण नही प्राप्त कर सकता।

धर्म के 10 लक्षण – 1 धृति=धर्य धारण करना 2 क्षमा करना 3 दमः = मन की बुरी वृतियों का दमन (नियंत्रण) करना 4 अस्तेय = चोरी न करना 5 शौचं= शरीर और मन की शुद्धता (मन से सब का भला सोचना) 6 इन्द्रियनिग्रह = ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का नियन्त्रण 7 धीः = बुद्धि पूर्वक विचार करके सब काम करना 8 विद्या= विद्या सीखने में सदा तत्पर रहना 9 सत्यं= मन, कर्म और वचन से सत्य का ही आचरण करना 10 अक्रोधः = क्रोध न करना।

महर्षि मनु ने धर्म के ये 10 लक्षण बताए हैं । क्या गीता इस धर्म को त्याग करने का उपदेश कर सकती है ? कभी नही।

गीता मे ईश्वर का निराकार होना (रामपाल की "गहरी नजर मे गीता" से)

रामपाल अपने प्रवचनों मे परमात्मा को साकार कहता है। गीता मे भी ईश्वर को निराकार बताया गया है और खुद रामपाल ने भी अपनी पुस्तक "गहरी नजर मे गीता" अध्याय13 श्लोक 12-15 में यही स्वीकार किया है।

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते।१२।

ज्ञेयम्, यत्, तत्, प्रवक्ष्यामि, यत्, ज्ञात्वा, अमृतम्, अश्नुते।
अनादिमत्, परम्, ब्रह्म, न, सत्, तत्, न, असत्, उच्यते।।12।।

अनुवाद : (यत्) जो (ज्ञेयम्) जानने योग्य है तथा (यत्) जिसको (ज्ञात्वा) जानकर मनुष्य (अमृतम्) परमानन्दको (अश्नुते) प्राप्त होता है (तत्) उसको (प्रवक्ष्यामि) भलीभाँति कहूँगा। (तत्) वह (अनादिमत्) अनादिवाला (परम्) परम (ब्रह्म) ब्रह्म (न) न (सत्) सत् ही (उच्यते) कहा जाता है (न) न (असत्) असत् ही। (12)

समीक्षा - यहां पर रामपाल लिख रहा है कि अनादि परम ब्रह्म अर्थात परमात्मा जानने योग्य है। जिसको जानकर मनुष्य को परमानन्द को प्राप्त होता है।

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।१३।

सर्वतः पाणिपादम्, तत्, सर्वतोक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतःश्रुतिमत्, लोके, सर्वम्, आवृत्य, तिष्ठति।।13।।

अनुवाद : (तत्) वह (सर्वतःपाणिपादम्) सब ओर हाथ-पैरवाला (सर्वतोक्षिशिरोमुखम्) सब ओर नेत्र सिर और मुखवाला तथा (सर्वतःश्रुतिमत्) सब ओर कानवाला है। क्योंकि वह (लोके)संसारमें (सर्वम्) सबको (आवृत्य) व्याप्त करके (तिष्ठति) स्थित है। (13)

यहां पर भी परमात्मा के बारे मे विस्तार से बताते हुए कहा गया है कि-
वह परमात्मा सब ओर हाथ पैर वाला, सब और नेत्र (आंख) सिर, मुंह वाला और सब ओर कान वाला है। तनिक विचार करें । कबीर पूर्ण परमात्मा नहीं हो सकते क्योंकि कबीर के जहां हाथ हैं वहां पर पैर नही और जहा पर पैर हैं वहां पर सिर

जहां सिर है वहां कान नही हो सकता। साकार कबीर परमात्मा की आंखें सब ओर नही हो सकती । सब देखने की शक्ति(सब औरआंख), सबके मन मे प्रेरणा देने की शक्ति (सब और मुंह), सब कुछ सुनने की शक्ति (सर्वतः श्रुतिमत्) केवल निराकार और सर्वव्यापक परमात्मा मे हो सकती है। साकार परमात्मा कबीर की देखने, सुनने की शक्ति सीमित होगी। इस श्लोक मे परमात्मा को सर्वव्यापक कहा है।

अध्याय 13 का श्लोक 14

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च।१४।

सर्वेन्द्रियगुणाभासम्, सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तम्, सर्वभृत्, च, एव, निर्गुणम्, गुणभोक्तृ, च।।14।।

अनुवाद : (सर्वेन्द्रियगुणाभासम्) सम्पूर्ण इन्द्रियोंके विषयोंको जाननेवाला है परंतु वास्तवमें (सर्वेन्द्रियविवर्जितम्) सब इन्द्रियोंसे रहित है (च) तथा (असक्तम्) आसक्तिरहित होनेपर (एव) भी (सर्वभृत्) सबका धारण-पोषण करनेवाला (च) और (निर्गुणम्) निर्गुण होनेपर भी (गुणभोक्तृ) गुणोंको भोगनेवाला है। (14)

वह परमात्मा सभी इन्द्रियों से रहित है अर्थात परमात्मा मे आंखे, कान, नाक, हाथ पैर आदि इन्द्रिया नहीं है। परन्तु सभी इन्द्रियों के गुण जैसे देखना, सुनना, बोलना आदि परमात्मा मे हैं। इसलिए परमात्मा सब का धारण पोषण करता है। साकार परमात्मा कबीर के तो आंख, नाक और कान आदि हैं। इसलिए कबीर परमात्मा नही है। परमात्मा तो निराकार और सर्वव्यापी है।

अध्याय 13 का श्लोक 15

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्।१५।

बहिः, अन्तः, च, भूतानाम्, अचरम्, चरम्, एव, च।
सूक्ष्मत्वात्, तत्, अविज्ञेयम्, दूरस्थम्, च, अन्तिके, च, तत्।।15।।

अनुवाद : (भूतानाम्) चराचर सब भूतोंके (बहिः अन्तः) बाहर-भीतर परिपूर्ण है (च) और (चरम् अचरम्) चर-अचररूप (एव) भी वही है (च) और (तत्) वह (सूक्ष्मत्वात्) सूक्ष्म होनेसे (अविज्ञेयम्) अविज्ञेय है अर्थात् जिसकी सही स्थिति न जानी जाए। (च) तथा (अन्तिके) अति समीपमें (च) और (दूरस्थम्) दूरमें भी स्थित (तत्) वही है। (15)

वह परमात्मा सब भूतों (धरती, जल, वायु, अग्नि आदि) के और चर(मनुष्य,पक्षी

आदि), अचर (पेड़ पौधे) के बाहर और भीतर है। ईशोपनिषद के पहले मन्त्र मे कहा गया है- इस संसार के कण कण मे ईश्वर का वास है।

ईशा वास्यमिदꣳ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।

स्वयं सन्त कबीर दास जी ने भी ईश्वर को सर्वव्यापक माना है। (गुरू ग्रन्थ पृष्ठ 855)

कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥
Says Kabeer, O my Lord, You are contained in all. सरब बिआपी= सर्वव्यापी

तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी ॥४॥३॥
There is none as merciful as You are, and none as sinful as I am. ||4||3||

वेदों में कवि और रामपाल – (अध्यात्मिक ज्ञान गंगा से)

-: पूर्ण प्रभु कभी माँ से जन्म नहीं लेता का प्रमाण :-

यजुर्वेद अध्याय नं. 40 श्लोक नं. 8 में प्रत्यक्ष प्रमाण है।

यजुर्वेद अध्याय न. 40 श्लोक न. 8(संत रामपाल दास द्वारा भाषा–भाष्य):–

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपापविंद्यम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतो अर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। 8 ।।

सः–परि अगात–शुक्रम्–अकायम्–अव्रणम्–अस्नाविरम्–शुद्धम्–अपाप –अविंद्धम्–कविर्–मनीषी–परिभूः–स्वयम्भूः–याथातथ्यतः–अर्थान्–व्यदधात्–शाश्वतीभ्यः–समाभ्यः

अनुवादः– (सः) वह (परि अगात) पूर्ण रूप से अवर्णनीय सर्वशक्तिवान पूर्ण ब्रह्म अविनाशी है। (अस्नाविरम्) बिना नाड़ी के शरीर युक्त है (शुक्रम) वीर्य से बने (अकायम्) पंचतत्व के शरीर रहित (अव्रणम्) छिद्र रहित व चार वर्ण, ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्री, शुद्र से भिन्न (शुद्धम्) पवित्र (अपाप) निष्पाप (कविर) कविर्देव अर्थात् कबीर परमात्मा है, वह कबीर (मनीषी) महाविद्वान है जिसका ज्ञान (अविंद्धम्) अछेद है अर्थात् उनके ज्ञान को तर्क–वितर्क में कोई नहीं काट सकता वह (परिभूः) सर्व प्रथम प्रकट होने वाला प्रभु है जो सर्व प्रथम प्रकट होने वाला तथा सर्व मनोकामना पूर्ण करने वाला प्रभु है (व्यदधात्) नाना प्रकार के ब्रह्मण्ड़ों को रचने वाला (स्वयम्भूः) स्वयं प्रकट होने वाला (याथा तथ्यतः) जैसा कि प्रमाणित है तथा (अर्थान्) सही अर्थों में अर्थात् वास्तव में (शाश्वतीभ्यः) जो उस प्रभु के विषय में लिखी अमर वाणी में प्रमाण है वह वैसा ही अविनाशी पूर्ण शक्ति युक्त अमृत वाणी से अर्थात् शब्द शक्ति से समृद्ध (समाभ्यः) पूर्ण ब्रह्म के समान कांति युक्त है अर्थात् पूर्ण परमात्मा के समान आभा वाला स्वयं कबीर ही पूर्ण ब्रह्म है।

अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 430

रामपाल के वेदज्ञान की परीक्षा –

रामपाल दास अपने संस्कृत न जानने वाले अनुयायिओं को मूर्ख बनाते हुए वेदों के बेतुके अर्थ करता है और कहता है कि देखो यहाँ पर स्वामी दयानन्द ने गलत अर्थ किया है। रामपाल को तो व्याकरण के साधारण नियम भी नहीं पता । यहां पर इस मन्त्र का आदि शंकराचार्य जी द्वारा किया हुआ अर्थ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा किया गया अर्थ एक समान है।

ईशोपनिषद मन्त्र 8 भाष्यकार आदि शंकराचार्य -

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रण-
मस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतो-
ऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

स पर्यगात्, स यथोक्त आत्मा पर्यगात् परि समन्तात् अगात् गतवान्, आकाशवद्व्यापीत्यर्थः । शुक्रं शुभ्रं ज्योतिष्मत् दीप्तिमानित्यर्थः । अकायम् अशरीरः लिङ्गशरीरवर्जित इत्यर्थः । अव्रणम् अक्षतम् । अस्नाविरम् स्नावाः सिरा यस्मिन्न विद्यन्त इत्यस्नाविरम् । अव्रणमस्नाविरमित्येताभ्यां स्थूलशरीरप्रतिषेधः । शुद्धं निर्मलमविद्यामलरहितमिति कारणशरीरप्रतिषेधः । अपापविद्धं धर्माधर्मादिपापवर्जितम् । शुक्रमित्यादीनि वचांसि पुलिङ्गत्वेन परिणेयानि, स पर्यगात् इत्युपक्रम्य कविर्मनीषी इत्यादिना पुलिङ्गत्वेनोपसंहारात् । कविः क्रान्तदर्शी सर्वदृक्, 'नान्योऽतोऽस्ति द्रष्टा' इत्यादिश्रुतेः । मनीषी मनस ईषिता, सर्वज्ञ ईश्वर इत्यर्थः । परिभूः सर्वेषां परि उपरि भवतीति परिभूः । स्वयम्भूः

स्वयमेव भवतीति, यषामुपरि भवति यश्चोपरि भवति स सर्वं स्वयमेव भवतीति स्वयभू । स नित्यमुक्त ईश्वर याथातथ्यत सर्वज्ञत्वात् यथातथाभावो याथातथ्य तस्मात् यथाभूतकर्मफलसाधनत अर्थान् कर्तव्यपदार्थान् व्यदधात् विहितवान्, यथानुरूप व्यभजदित्यर्थ । शाश्वतीभ्य नित्याभ्य समाभ्य सवत्सराख्येभ्य प्रजापतिभ्य इत्यथ ।।

अब हम रामपाल के अर्थों की तुलना शंकराचार्य और महर्षि दयानन्द के किए गए अर्थ से करेंगे-

रामपाल – परि अगात – पूर्ण रूप से अवर्णनीय सर्वशक्तिमान पूर्ण ब्रह्म अविनाशी है।

महर्षि दयानन्द –परि अगात् –सर्वतः व्याप्तोऽस्ति – सब और से व्याप्त (सर्वव्यापी)

आदि शंकराचार्य- परि अगात् – पर्यगात् – आकाशव्द्यापी – आकाश के समान सर्व व्यापक

रामपाल – शुक्रम- वीर्य से बने

महर्षि दयानन्द- शुक्रम् – शीघ्रकारी, सर्वशक्तिमान्

आदि शंकराचार्य –शुक्रम् – शुभ्र ज्योतिष्मत्

रामपाल –कविर- कविर्देव अर्थात कबीर परमात्मा है वह कबीर

महर्षि दयानन्द- कविः - सर्वज्ञ (कविर शब्द संस्कृत मे नही है।)

आदि शंकराचार्य – कविः – क्रान्तदर्शी , सर्वद्ऋक – सबको देखने वाला

रामपाल – अकायम् - पंचतत्व के शरीर रहित

महर्षि दयानन्द- अकायम् - स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीर रहित

आदि शंकराचार्य – अकायम् – अशरीर (शरीर रहित)

शंकराचार्य जी द्वारा इस मन्त्र मे ईश्वर की कुछ विशेषताएं बताई गई हैं

*लिंगशरीर वर्जितः (सूक्ष्म शरीर रहित) *स्थूलशरीरप्रतिषेध (स्थूल शरीर रहित =स्थूल शरीर ही हमें आखों से दिखाइ देता है।)* कारण शरीर प्रतिषेध= कारण शरीर रहित

कृपया ध्यान दें – वेदमन्त्र का अर्थ करते समय महर्षि दयानन्द जी और आदि शंकराचार्य जी दोनो ही विद्वान परमात्मा को स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर रहित मानते है । यहाँ पर साफ़ साफ़ पता चलता है कि आदि शंकराचार्य जी भी महर्षि दयानन्द की तरह परमात्मा को सर्वव्यापक और निराकार बताते हैं, रामपाल का कबीर नही। क्या रामपाल संस्कृत का आदि शंकराचार्य से भी बड़ा विद्वान है?

स्वयं कबीर जी ने अपने बारे मे क्या कहते हैं ? गुरु ग्रंथ पृष्ठ 1367

कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु ॥
किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु ॥६२॥
यहाँ पर कबीर जी अपने शरीर को अल्प शक्ति वाला बता रहे हैं और कह रहे हैं कि जो किया है परमात्मा ने किया है।

कबीर सुपनै हू बरड़ाइ कै जिह मुखि निकसै रामु ॥
ता के पग की पानही मेरे तन को चामु ॥६३॥

कबीर माटी के हम पूतरे मानसु राखिओ नाउ ॥
चारि दिवस के पाहुने बड बड रूंधहि ठाउ ॥६४॥

कबीर जी स्वयं को माटी का पुतला अर्थात पंचतत्व से बना हुआ बता रहे हैं । रामपाल कबीर को पंचतत्व के शरीर रहित कह रहा है। अब या तो रामपाल झूठ बोल रहा है या महान क्रांतिकारी संत कबीर जी ? यदि आप रामपाल को सही मानेंगे तो कबीर जी गलत सिद्ध होंगे। निर्णय आप स्वयं करें।

चारों युगों मे कबीर ज्ञान गंगा पृष्ठ 90

पूर्ण परमात्मा कबीर सतयुग सत्सुकृत,त्रेता मे मुनिन्द्र,द्वापर में करूणामय और कलयुग मे कबीर नाम से आते है।

कबीर जी स्वयं अपने पुर्व जन्म के विषय मे क्या कहते हैं। (गुरू ग्रन्थ पृष्ठ 326)

ਜਬ ਹਮ ਰਾਮ ਗਰਭ ਹੋਇ ਆਏ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥जब **हम राम गरभ होइ आए** ॥१॥ रहाउ ॥
before I came into the womb this time. ||1||Pause|| मैं मां के गर्भ मे आने से पहले
ਜੋਗੀ ਜਤੀ ਤਪੀ ਬ੍ਰਹਮਚਾਰੀ ॥जोगी जती तपी ब्रहमचारी ॥

I was a Yogi, a celibate, a penitent, and a Brahmchaaree, with strict self-discipline.
योगी = योगसाधक, यति = सन्यासी, तपी = तपस्वी और ब्रह्मचारी था।

ਕਬਹੂ ਰਾਜਾ ਛਤ੍ਰਪਤਿ ਕਬਹੂ ਭੇਖਾਰੀ ॥੨॥कबहू राजा छत्रपति कबहू भेखारी ॥२॥

Sometimes I was a king, sitting on the throne, and sometimes I was a beggar. ||2||
किसी जन्म में मैं सम्राट बना तो किसी जन्म मे भिखारी बना।

ਸਾਕਤ ਮਰਹਿ ਸੰਤ ਸਭਿ ਜੀਵਹਿ ॥**साकत मरहि संत सभि जीवहि** ॥ साकत = शाक्त (वाममार्गी)

The faithless cynics shall die, while the Saints shall all survive. अब कबीर जी अपनी मान्यता को बताते हुए कहते हैं कि शाक्त (जो शराब पीना, मांस खाना और पराई स्त्री से सम्बन्ध रखना आदि को धर्म का अंग मानते हैं) जीते जी भी मरे हुए के समान है (बुरे आचरण के कारण) । सन्त (संयमी, सदाचारी, परोपकरी) ही सच्चे अर्थों मे जीवित है।

ਰਾਮ ਰਸਾਇਨੁ ਰਸਨਾ ਪੀਵਹਿ ॥੩॥ **राम रसाइनु रसना पीवहि** ॥३॥ रसाइनु= रसायन

They drink in the Lord's Ambrosial Essence with their tongues. ||3|| आयुर्वेद में स्वास्थ्य वर्धक औषधियों को रसयान (जैसे च्यवनप्राश) कहते हैं । अपनी रसना (जीभ) से ईश्वर का जप करना जीवनदायी रसायन के समान है।

ਕਹੁ ਕਬੀਰ ਪ੍ਰਭ ਕਿਰਪਾ ਕੀਜੈ ॥ **कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै** ॥

Says Kabeer, O God, have mercy on me. कबीर जी कहते हैं कि हे ईश्वर अब मुझ पर कृपा करो।

ਹਾਰਿ ਪਰੇ ਅਬ ਪੂਰਾ ਦੀਜੈ ॥੪॥੧੩॥**हारि परे अब पूरा दीजै** ॥४॥१३॥

I am so tired; now, please bless me with Your perfection. ||4||13||

यहां पर कबीर दास जी प्रभु (परमात्मा) से पूर्णता (मुक्ति) की प्रार्थना करते हुए अपने पिछले जन्मों के बारे मे बताते हैं कि किसी जन्म मे मैं राजा बना तो किसी जन्म मे भिखारी। किसी जन्म में योगी बना, कभी यति= सन्यासी बना, कभी तपस्वी बना और कभी ब्रह्मचारी बना। यहां पर स्वयं सन्त कबीर दास जी स्वयं अपने पूर्व जन्मो के बारे मे बता रहे हैं। सन्त कबीर जी अपने पिछले जन्मों का हाल बताते हुए कहीं पर भी *"सत्सुकृत, मुनिन्द्र, करूणामय"* **का जिक्र भी नहीं करते हैं ।**

क्या रामपाल झूठ बोल रहा है? *अब आपको निर्णय करना है कि कौन सच बोल रहा है कबीर जी या रामपाल ।*

पूर्ण प्रभु कबीर जी (कविर्देव) सतयुग में सतसुकृत नाम से स्वयं प्रकट हुए थे। उस समय गरुड़ जी, श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि को सतज्ञान समझाया था। श्री मनु महर्षि जी को भी तत्वज्ञान समझाना चाहा था। परन्तु श्री मनु जी ने परमेश्वर के ज्ञान को सत न जानकर श्री ब्रह्मा जी से सुने वेद ज्ञान पर आधारित होकर तथा अपने द्वारा निकाले वेदों के निष्कर्ष पर ही आरूढ़ रहे। इसके विपरीत परमेश्वर सतसुकृत जी का उपहास करने लगे कि आप तो सर्व विपरीत ज्ञान कह रहे हो। इसलिए परमेश्वर सतसुकृत का उर्फ नाम वामदेव निकाल लिया (वाम

ज्ञान गंगा पृष्ठ 90

जगदगुरू रामपाल यहां पर साफ़ साफ़ झूठ बोल रहा है। वर्तमान मनुस्मृति मे कहीं पर भी सत्सुकृत या वामदेव का कोई भी वर्णन नही है। अन्य किसी भी संस्कृत की पुस्तक मे भी सत्सुकृत नाम का कोई भी व्यक्ति नहीं है। मैने गुरू ग्रन्थ साहिब मे दी गई कबीर वाणी और ग्रन्थावली मे ढूंढने की कोशिश की परन्तु कहीं पर भी कबीर के लिए सत्सुकृत शब्द नहीं मिला। अंत में पता चल जाता है कि रामपाल 100% झूठ बोल कर गुमराह कर रहा है।

"त्रेतायुग में कविर्देव (कबीर साहेब) का मुनिन्द्र नाम से प्राकाट्य"

"नल तथा नील को शरण में लेना"

त्रेतायुग में स्वयंभु (स्वयं प्रकट होने वाला) कविर्देव (कबीर परमेश्वर) रूपान्तर करके मुनिन्द्र ऋषि के नाम से आए हुए थे। अनल अर्थात् नल तथा अनील अर्थात् नील। दोनों आपस में मौसी के पुत्र थे। माता-पिता का देहान्त हो चुका था। नल तथा नील दोनों शारीरिक व मानसिक रोग से अत्यधिक पीड़ीत थे। सर्व ऋषियों व सन्तों से कष्ट निवारण की प्रार्थना कर चुके थे। सर्व सन्तों ने बताया था कि यह आप का प्रारब्ध का पाप कर्म का दण्ड है, यह आपको भोगना ही पड़ेगा। इसका कोई समाधान नहीं है। दोनों दोस्त जीवन से निराश होकर मृत्यु का इंतजार कर रहे थे।

एक दिन दोनों को मुनिन्द्र नाम से प्रकट पूर्ण परमात्मा का सतसंग सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। सत्संग के उपरांत ज्यों ही दोनों ने परमेश्वर कविर्देव (कबीर साहेब) उर्फ मुनिन्द्र ऋषि जी के चरण छुए तथा परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने सिर पर हाथ रखा तो दोनों का असाध्य रोग छू मन्त्र हो गया अर्थात् दोनों नल तथा नील स्वस्थ हो गए। इस अद्भुत चमत्कार को देख कर प्रभु के चरणों में गिर कर घण्टों रोते रहे तथा कहा आज हमें प्रभु मिल गया जिसकी तलाश थी तथा उससे प्रभावित होकर उनसे

नाम (दीक्षा) ले लिया तथा मुनिन्द्र साहेब जी के साथ ही सेवा में रहने लगे। पहले संतों का समागम पानी की व्यवस्था देख कर नदी के किनारे पर होता था। नल और नील दोनों बहुत प्रभु प्रेमी तथा भोली आत्माएँ थी। परमात्मा में श्रद्धा बहुत थी। सेवा बहुत किया करते थे। समागमों में रोगी व वृद्ध व विकलांग भक्तजन आते तो उनके कपड़े धोते तथा बर्तन साफ करते। उनके लोटे और गिलास मांज देते थे। परंतु थे भोले से दिमाग के। कपड़े धोने लग जाते तो सत्संग में जो प्रभु की कथा सुनी होती उसकी चर्चा करने लग जाते। वे दोनों प्रभु चर्चा में बहुत मस्त हो जाते और वस्तुएँ दरिया के जल में डूब जाती। उनको पता भी नहीं चलता। किसी की चार वस्तु ले कर जाते तो दो वस्तु वापिस ला कर देते थे। भक्तजन कहते कि भाई आप सेवा तो बहुत करते हो, परंतु हमारा तो बहुत काम बिगाड़ देते हो। ये खोई हुई वस्तुएँ हम कहाँ से ले कर आयें? आप हमारी सेवा ही करनी छोड़ दो। हम अपनी सेवा आप ही कर लेंगे। फिर नल तथा नील रोने लग जाते थे कि हमारी सेवा न छीनों। अब की बार नहीं खोएँगे। परन्तु फिर वही काम करते। फिर प्रभु की चर्चा में लग जाते और वस्तुएँ दरिया जल में डूब जाती। भक्तजनों ने ऋषि मुनिन्द्र जी से प्रार्थना की कि कृपा नल तथा नील को समझाओ। ये न तो मानते है और मना करते हैं तो रोने लग जाते हैं। हमारी तो आधी भी वस्तुएँ वापिस नहीं लाते। ये नदी किनारे सत्संग में सुनी भगवान की चर्चा में मस्त हो जाते हैं और वस्तुएँ डूब जाती हैं। मुनिन्द्र साहेब ने एक दो बार तो उन्हें समझाया। वे रोने लग जाते थे कि साहेब हमारी ये सेवा न छीनों। सतगुरु मुनिन्द्र साहेब ने कहा बेटा नल तथा नील खूब सेवा करो, आज के बाद आपके हाथ से कोई भी वस्तु चाहे पत्थर या लोहा भी क्यों न हो जल में नहीं डुबेगी। मुनिन्द्र साहेब ने उनको यह आशीर्वाद दे दिया।

ज्ञान गंगा तथा अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 237

यहां पर भी जगदगुरू रामपाल झूठ बोल रहा है और अपने चेलों को उल्लू बना रहा है। श्रीराम जी समय मे महर्षि वाल्मीकि जी की लिखी हुइ रामायण मे मुनिन्द्र नाम के किसी आदमी का नाम भी नहीं है। रामपाल की ये कहानी 100% प्रतिशत झूठ है।ये कहानी या तो रामपाल ने गढी है या किसी झूठ और बकवास से भरे हुए शेखचिल्ली से उधार ली है। कहने का अर्थ ये है कि ये कहानी 100% गप्प है। वाल्मीकि रामायण मे न तो नल और नील आदि के विषय मे ये कहानी है और न ही मुनिन्द्र के वरदान की। वाल्मीकि रामायण(गोविन्दराज टीका सहित), गोस्वामी तुलसीदास जी की रामचरितमानस, तमिल भाषा की कम्ब रामायण(हिन्दी अनुवाद)

तेलुगु की रंगनाथ रामायण(हिन्दी अनुवाद) और बंग्ला की कृतिवास रामायण(हिन्दी अनुवाद) में भी मुनिन्द्र नाम का कोई भी पात्र नहीं है। अतः मुनिन्द्र की गप्प या तो रामपाल ने खुद बनाई है या किसी शेखचिल्ली से उधार ली है। इस लिए रामपाल और उसकी लिखी हुई ज्ञान गंगा और अध्यात्मिक ज्ञान गंगा दोनो झूठ और मूर्खता से भरी हैं। यदि पूर्ण परमात्मा कबीर (मुनिन्द्र) के आशीर्वाद से पत्थर तैर सकते हैं तो **क्या पूर्ण तत्वदर्शी सन्त, जगतगुरू, <u>धरती पर अवतार रामपाल</u> अपने आशीर्वाद से लोहे की 25-30 ग्राम की 10 कीलों (केवल 250-300 ग्राम) को या एक ईंट को भी नही तैरा सकता?** सत्य और असत्य का फ़ैसला करने के लिए रामपाल को भी ये जादू कर के दिखाना चाहिए।

<u>वाल्मीकि रामायण मे समुद्र पर सेतु(पुल)बनाने का वर्णन</u> (युद्धकाण्ड)

अब्रवीद्वानरश्रेष्ठो वाक्यं रामं महाबलः[3]। अहं सेतुं करिष्यामि विस्तीर्णे वरुणालये ॥ ४७
पितुः सामर्थ्यमास्थाय तत्त्वमाह महोदधिः। दण्ड एव वरो लोके पुरुषस्येति मे मतिः ॥४८
धिक् क्षमामकृतज्ञेषु सान्त्वं दानमथापि वा। अयं हि सागरो भीमः सेतुकर्मदिदृक्षया॥ ४९
ददौ दण्डभयाद्गाधं राघवाय महोदधिः। मम मातुर्वरो दत्तो मन्दरे विश्वकर्मणा॥ ५०
मया तु सदृशः पुत्रस्तव देवि भविष्यति। औरसस्तस्य पुत्रोऽहं सदृशो विश्वकर्मणा[४] ॥ ५१
स्मारितोऽस्म्यहमेतेन तत्त्वमाह महोदधिः। न चाप्यहमनुक्तो वै प्रब्रूयामात्मनो गुणान्॥ ५२
समर्थश्चाप्यहं सेतुं कर्तुं वै वरुणालये। काममद्यैव बध्नन्तु सेतुं वानरपुंगवाः॥ ५३
ततोऽतिसृष्टा रामेण सर्वतो हरियूथपाः। अभिपेतुर्महारण्यं हृष्टाः शतसहस्रशः॥ ५४
ते नगान्नगसंकाशाः शाखामृगगणर्षभाः। बभञ्जुर्वानरास्तत्र प्रचकर्षुश्च सागरम्॥ ५५
ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वंशैश्च वानराः। कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि॥ ५६
बिल्वैश्च सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः। चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन्॥ ५७
समूलांश्च विमूलांश्च पादपान् हरिसत्तमाः। इन्द्रकेतूनिवोद्यम्य प्रजह्रुर्हरयस्तरून्॥ ५८
तालान् दाडिमगुल्मांश्च नारिकेलान् विभीतकान्। बकुलान् खदिरान्निम्बान् समाजह्रुः समन्ततः
हस्तिमात्रान् महाकायाः पाषाणांश्च महाबलाः। पर्वतांश्च समुत्पाट्य यन्त्रैः[५] परिवहन्ति च ॥६०
प्रक्षिप्यमाणैरचलैः सहसा जलमुद्धतम्। समुत्पतितमाकाशमुपासर्पत्ततस्ततः॥ ६१
समुद्रं क्षोभयामासुर्वानराश्च समन्ततः। सूत्राण्यन्ये प्रगृह्णन्ति व्यायतं शतयोजनम्॥ ६२
दशयोजनविस्तारं शतयोजनमायतम्[६]। नलश्चक्रे महासेतुं मध्ये नदनदीपतेः॥ ६३
स तथा क्रियते सेतुर्वानरैर्घोरकर्मभिः। दण्डानन्ये प्रगृह्णन्ति विचिन्वन्ति तथा परे॥ ६४
वानराः शतशस्तत्र रामस्याज्ञापुरःसराः। मेघाभैः पर्वताग्रैश्च तृणैः काष्ठैर्बबन्धिरे॥ ६५

पुष्पिताग्रैश्च तरुभिः सेतुं बध्नन्ति वानराः । पाषाणांश्च गिरिप्रख्यान् गिरीणां शिखराणि च ॥

दृश्यन्ते परिधावन्तो गृह्य वारणसंनिभाः । शिलानां क्षिप्यमाणानां शैलानां च निपात्यताम् ॥
बभूव तुमुलः शब्दस्तदा तस्मिन् महोदधौ । कृतानि प्रथमेनाह्ना योजनानि चतुर्दश ॥ ६८

प्रहृष्टैर्गजसंकाशैस्त्वरमाणैः प्लवङ्गमैः । द्वितीयेन तथा चाह्ना योजनानि तु विंशतिः ॥ ६९

कृतानि प्लवगैस्तूर्णं भीमकायैर्महाबलैः । अह्ना तृतीयेन तथा योजनानि कृतानि तु ॥ ७०

त्वरमाणैर्महाकायैरेकविंशतिरेव च । चतुर्थेन तथा चाह्ना द्वाविंशतिरथापि च ॥ ७१

योजनानि महावेगैः कृतानि त्वरितैस्तु तैः । पञ्चमेन तथा चाह्ना प्लवगैः क्षिप्रकारिभिः ॥७२

योजनानि त्रयोविंशत्सुवेलमधिकृत्य वै । स वानरवरः श्रीमान् विश्वकर्मात्मजो बली ॥ ७३

बबन्ध सागरे सेतुं यथा चास्य पिता तथा । स नलेन कृतः सेतुः सागरे मकरालये ॥ ७४

शुशुभे सुभगः [१]श्रीमान् स्वातीपथ इवाम्बरे । ततो देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः ॥ ७५

आगम्य गगने तस्थुर्द्रष्टुकामास्तदद्भुतम् । दशयोजनविस्तीर्णं शतयोजनमायतम् ॥ ७६

ददृशुर्देवगन्धर्वा नलसेतुं सुदुष्करम् । आप्लवन्तः प्लवन्तश्च गर्जन्तश्च प्लवङ्गमाः ॥ ७७

तदचिन्त्यमसह्यं च अद्भुतं रोमहर्षणम् । ददृशुः सर्वभूतानि सागरे सेतुबन्धनम् ॥ ७८

-

{ MATHS FORMULA)}

(TOOLS)

लंका मे सुवेल पर्वत पर पहुंच गये। {रामायण के लम्बाई के मात्रक (UNIT)योजन(अनुमान 540 मीटर) की स्पष्ट जानकारी नही है।} *इस प्रकार पाठक पूरी तरह से जान चुके होंगे कि रामायण मे न तो कहीं पर भी मुनिन्द्र का नाम है, न हि नल नील को मुनिन्द्र के दिए वरदान का, न श्रीराम जी को मुनिन्द्र के मिलने का और न ही पत्थर के तैरने का कहीं पर भी वर्णन है।* । इस सब विवरण से ये परिणाम निकलता है कि रामपाल दास बेहद झूठा, बकवासी,गप्पबाज है। बेसिर पैर की बातें करके अपने चेलों और दुनिया को उल्लू बनाता है।रामपाल दास केवल एक शेखचिल्ली है जो मनमाने झूठे किस्से गढता रहता है और महापुरूषों का अपमान करता रहता है।

"द्वापरयुग में कविर्देव (कबीर साहेब) का करूणामय नाम से प्राकाट्य"

परमेश्वर कबीर (कविर्देव) द्वापर युग में करूणामय नाम से प्रकट हुए थे। उस समय एक वाल्मीक जाति में उत्पन्न भक्त सुदर्शन सुपच (अनुसुचित जाति का) उनका शिष्य हुआ था। इसी सुदर्शन जी ने पाण्डवों की यज्ञ सफल की थी। जो न तो श्री कृष्ण जी के भोजन करने से सफल हुई थी, न ही तेतीस करोड़ देवताओं, अठासी हजार ऋषियों, बारह करोड़ ब्राह्मणों, नौ नाथों, चौरासी सिद्धों आदि के भोजन खाने से सफल हुई थी। भक्त सुदर्शन वाल्मीक पूर्ण गुरु जी से वास्तविक तीन मंत्र प्राप्त करके सत साधना गुरु मर्यादा में रहते हुए कर रहा था।

जगदगुरू रामपाल की बकवास का अगला नमूना देखें।ज्ञान गंगा पुस्तक के पृष्ठ 97 पर ये गप्प लिखी हुई है।भारत मे विभिन्न प्रकाशनो द्वारा छपी महाभारत के किसी भी संस्करण मे ये गप्प नहीं है। कबीर का करूणामय नाम से किसी भी महाभारत या भागवत मे वर्णन नही है। कबीर के भक्त सुदर्शन का युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे सम्मिलित होने का भी कोइ प्रसंग नही है। 33 करोड देवताओं और 12 करोड ब्राह्मणो (कुल 45 करोड) के यज्ञ मे भोजन खाने की बात भी केवल कोइ नशेडी या मन्दबुद्धि कह सकता है। रामपालदास ने ये गप्प फ़ैंकते समय ये भी नही सोचा कि 45 करोड लोगो को भोजन के लिए बैठने के लिए कितना स्थान और कितना भोजन चाहिए। इस तरह की गप्प को केवल पागल ही सच मानेंगे। *आइये रामपाल की अगली बेतुकी झूठ को जाने।* (ज्ञान गंगा पृष्ठ 99)

"द्वापर युग में इन्द्रमति को शरण में लेना"

अब रानी को तो चिंता बनी हुई थी। श्रद्धा से जाप कर रही थी। (कबीर साहेब) करूणामय साहेब का रूप बना कर गुरुदेव रूप में काल आया, आवाज लगाई इन्द्रमति, इन्द्रमति। अब उसको तो पहले ही डर था, नाम स्मरण किया। काल की तरफ नहीं देखा। दो मिनट के बाद जब देखा तो काल का स्वरूप बदल गया। काल का ज्यों का त्यों चेहरा दिखाई देने लगा। करूणामय साहेब का स्वरूप नहीं रहा। जब काल ने देखा कि तेरा तो स्वरूप बदल गया। वह जान गया कि इसके पास कोई शक्ति युक्त मंत्र है। यह कहकर चला गया कि तुझे फिर देखूँगा। अब तो बच गई। रानी बहुत खुश हुई, फूली नहीं समाई। कभी अपनी बांदियों को कहने लगी कि मेरी मृत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने मुझे बचा दिया।

*यहां पर रामपालदास काल को शरीर वाला बताते हुए कहता कि काल करूणामय का रूप बना कर आया। उसके बाद काल का **चेहरा** दिखाई देने लगा।*

रामपाल दास अपनी पुस्तक ज्ञान गंगा मे कई स्थानो पर काल को ब्रह्म बता है और कहता कि वेद का ज्ञान ब्रह्म अर्थात काल का ज्ञान है।इस तरह की बेतुकी बातों से रामपाल की गप्प आसानी से पकड मे आ जाती है।**वेदों का उपदेश करने वाला ईश्वर (ब्रह्म) काल नहीं है क्योंकि यहां पर काल को शरीर वाला और चेहरे वाला कहा गया है परन्तु वेदों मे,उपनिषदों मे ब्रह्म को निराकार और सर्वव्यापक बताया गया है-** उदाहरण के लिए- "ओम खं ब्रह्म" –यजुर्वेद 40/17 वह ब्रह्म आकाश की तरह सर्वव्यापक है।ईशोपनिषद के पहले मन्त्र में भी ईश्वर को संसार मे व्यापक बताया गया है।वेद मे ईश्वर को "अकाय" अर्थात शरीर रहित कहा गया है। इसलिए रामपाल का बताया हुआ काल वेदों का ब्रह्म नही है।अभी तक आपने रामपालदास की ज्ञान गंगा की गप्पों की सचाई को जाना। आगे "धरती पर अवतार" पुस्तक की झूठ को बताया जएगा।

धरती पर अवतार

"पुरी में श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम कैसे बना"

(संत रामपाल दास जी महाराज के सतसंग वचनों से)

इन्द्रदमन उस स्थान पर गया जो परमेश्वर ने संत रूप में आकर बताया था। कबीर प्रभु अर्थात् अपरिचित संत को खोज कर समुद्र को रोकने की प्रार्थना की। प्रभु कबीर जी (कविर्देव) ने कहा कि जिस तरफ से समुद्र उठ कर आता है, वहाँ समुद्र के किनारे एक चौरा (चबूतरा) बनवा दे। जिस पर बैठ कर मैं प्रभु की भक्ति करूंगा तथा समुद्र को रोकूंगा। राजा ने एक बड़े पत्थर को कारीगरों से चबूतरा जैसा बनवाया, परमेश्वर कबीर उस पर बैठ गए। छटी बार मन्दिर बनना प्रारम्भ हुआ। उसी समय एक नाथ परम्परा के

में राज दरबार में गया। उसी समय पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर प्रभु एक अस्सी वर्षीय कारीगर का रूप बनाकर राज दरबार में उपस्थित हुआ। कमर पर एक थैला लटकाए हुए था जिसमें आरी बाहर स्पष्ट दिखाई दे रही थी, मानों बिना बताए कारीगर का परिचय दे रही थी तथा अन्य बसोला व बरमा आदि थेले में भरे थे। कारीगर वेश में प्रभु ने राजा से कहा मैंने सुना है कि प्रभु के मन्दिर के लिए मूर्तियाँ पूर्ण नहीं हो रही हैं। मैं 80 वर्ष का वृद्ध हो चुका हूँ तथा 60 वर्ष का अनुभव है। चन्दन की लकड़ी की मूर्ति प्रत्येक कारीगर नहीं बना सकता। यदि आप की आज्ञा हो तो सेवक उपस्थित है। राजा ने कहा कारीगर

आप मेरे लिए भगवान ही कारीगर बन कर आये लगते हो। मैं बहुत चिन्तित था। सोच ही रहा था कि कोई अनुभवी कारीगर मिले तो समस्या का समाधान बने। आप शीघ्र मूर्तियाँ बना दो। वृद्ध कारीगर रूप में आए कविर्देव (कबीर प्रभु) ने कहा राजन मुझे एक कमरा दे दो, जिसमें बैठ कर प्रभु की मूर्ति तैयार करूंगा। मैं अंदर से दरवाजा बंद करके स्वच्छता से मूर्ति

बनाऊंगा। ये मूर्तियां जब तैयार हो जायेंगी तब दरवाजा खुलेगा, यदि बीच में किसी ने खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनेगी उतनी ही रह जायेंगी। राजा ने कहा जैसा आप उचित समझो वैसा करो।

सर्व पाण्डे तथा मुख्य पांडा व राजा तथा सैनिक व श्रद्धालु मूर्तियों में प्राण स्थापना करने के लिए चल पड़े। पूर्ण परमेश्वर (कविर्देव) एक शुद्र का रूप धारण करके मन्दिर के मुख्य द्वार के मध्य में मन्दिर की ओर मुख करके खड़े हो गए। ऐसी लीला कर रहे थे मानों उनको ज्ञान ही न हो कि पीछे से प्रभु की प्राण स्थापना की सेना आ रही है। आगे-आगे मुख्य पांडा चल रहा था। परमेश्वर फिर भी द्वार के मध्य में ही खड़े रहे। निकट आ कर मुख्य पांडे ने शुद्र रूप में खड़े परमेश्वर को ऐसा धक्का मारा कि दूर जा कर गिरे तथा एकान्त स्थान पर शुद्र लीला करते हुए बैठ गए। राजा सहित सर्व श्रद्धालुओं ने मन्दिर के अन्दर जा कर देखा तो सर्व मूर्तियाँ उसी द्वार पर खड़े शुद्र रूप परमेश्वर का रूप धारण किए हुए थी। इस कौतूक को देखकर उपस्थित व्यक्ति अचम्भित हो गए। मुख्य पांडा कहने लगा प्रभु क्षुब्ध हो गया है क्योंकि मुख्य द्वार को उस शुद्र ने अशुद्ध कर दिया है। इसलिए सर्व मूर्तियों ने शुद्र रूप धारण कर लिया है। बड़ा अनिष्ठ हो गया है। कुछ समय उपरान्त

मूर्ति स्थापना हो जाने के कुछ दिन पश्चात् लगभग 40 फूट ऊँचा समुद्र का जल उठा जिसे समुद्री तुफान कहते हैं तथा बहुत वेग से मन्दिर की ओर चला। सामने कबीर परमेश्वर चौरा (चबुतरे) पर बैठे थे। अपना एक हाथ उठाया जैसे आर्शीवाद देते हैं, समुद्र उठा का उठा रह गया तथा पर्वत की तरह खड़ा रहा, आगे नहीं बढ़ सका। विप्र रूप बना कर समुद्र आया तथा चबूतरे पर बैठे प्रभु से कहा कि भगवन आप मुझे रास्ता दे दो, मैं मन्दिर तोड़ने जाऊंगा। प्रभु ने कहा कि यह मन्दिर नहीं है। यह तो महल (आश्रम) है। इस में विद्वान् पुरुष रहा करेगा तथा पवित्र गीता जी का ज्ञान दिया करेगा। आपका इसको विधवंश करना शोभा नहीं देता। समुद्र ने कहा कि मैं इसे अवश्य तोडूंगा। प्रभु ने कहा कि जाओ कौन रोकता है? समुद्र ने कहा कि मैं विवश हो गया हूँ। आपकी शक्ति अपार है। मुझे रस्ता दे दो प्रभु। परमेश्वर कबीर साहेब

ये सारी कहानी "धरती पर अवतार" नामक और अध्यात्मिक ज्ञान गंगा (201-202) पुस्तक मे लिखी हुई है। ये पुस्तक रामपाल की वैबसाइट पर उपलब्ध है और ये कहानी रामपाल दास के सत्संग वचनो से ली गइ है। इस कहानी में लिखी हुइ बाते एक दूसरे से मेल नहीं खाती हैं। पहले लिखा है कि कबीर प्रभु ने एक चबूतरा बनवाने के लिए कहा तो आगे लिखा है कि ***मैं (कबीर प्रभु) उस चबूतरे पर बैठ कर प्रभु की भक्ति करूंगा । अब आप विचार किजिये की कबीर प्रभु किसकी भक्ति करेंगे। यदि कबीर स्वयं प्रभु अर्थात परमात्मा हैं तो किसी दूसरे प्रभु अर्थात परमात्मा की भक्ति कैसे करेंगे।*** यदि कबीर को प्रभु की भक्ति करने वाला मनुष्य समझें तो कबीर को पूर्ण परमात्मा या परमेश्वर लिखना गलत है।यदि ये कहें की कबीर परमेश्वर अपनी स्वय ही अपनी भक्ति करते हैं तो ये अपने ही कन्धे पर चढने की तरह निरर्थक है। यदि यह माना जाए कि कारीगर बने हुए कबीर खुद को छिपा रहे थे तो कबीर पर झूठ बोलने का दोष लगेगा। आगे

लिखा है कि मुख्य पण्डे ने कबीर जी को एसा धक्का मारा कि दूर जा कर गिरे। जो कबीर एक समान्य से पण्डे के धक्के से दूर जा कर गिरे तो वह समुद्र को तो रोक ही नही सकता। यदि यह कहा जाए कि कबीर जी धक्का खाने के समय लीला कर रहे थे तो क्या कबीर जी किसी नाटक मण्डली के अभिनेता थे? निर्जीव मुर्तियां जो एक मक्खी को भी नहीं उडा सकती वे द्वार पर खडे शूद्र रूप परमेश्वर का रूप कैसे धारण कर सकती हैं। यहां पर भी रामपाल की मक्कारी नजर आती है।

धरती पर अवतार पृष्ठ 8

''अवतार की परिभाषा''

'अवतार' का अर्थ है ऊँचे स्थान से नीचे स्थान पर उतरना। विशेषकर यह शुभ शब्द उन उत्तम आत्माओं के लिए प्रयोग किया जाता है, जो धरती पर कुछ अद्भुत कार्य करते हैं। जिनको परमात्मा की ओर से भेजा हुआ मानते हैं या स्वयं परमात्मा ही का पृथ्वी पर आगमन मानते हैं।

धरती पर अवतार पृष्ठ 12

सन्त रामपाल दास जी महाराज भी परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) के उन अवतारों में से एक हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा अधर्म का नाश करते हैं।

*****_**सभी मनुष्यों को बताया जाता है कि धरती पर रामपाल अवतार हो चुका है जो बिना चश्मे के भी पढ सकता है।**_ *****धरती पर अवतार पृष्ठ 119 पर लिखा है

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी के पास सर्व सिद्धियाँ हैं ''एक सिद्धि तन हंस नियारा'' भावार्थ है कि एक ऐसी सिद्धि है जिसके प्रताप से जीव शरीर से भिन्न हो जाता है तथा शरीर भी जीवित रहता है। इसी आधार से परमात्मा कबीर जी मां के गर्भ में नहीं रहते। परन्तु शरीर गर्भ में तैयार हो जाता है तथा गर्भ से बाहर आ जाता है। तब उसमें अपने अंश को प्रवेश कर देते हैं। वह कबीर परमेश्वर वाली शक्ति लिए लीला करता है।

हम सब जानते हैं माता के पेट मे गर्भ तब तक वृद्धि करता है जब तक वह सजीव हो । केवल सजीव शिशु ही जन्म के समय माता के गर्भाशय से बाहर आता है। बिना आत्मा के गर्भाशय में मृत गर्भ न तो बढता है और न ही जन्म लेता है।मरा हुआ शिशु तो यन्त्र द्वारा काट कर निकाला जाता है। यहां पर भी रामपाल झूठ बोल रहा है।

अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 195- 197 पर इतना गंदा और अश्लील लिखा हुआ है कि यहां पर उसको लिखना और समीक्षा करना भी सम्भव नहीं है। इतना गंदा और असभ्य लिखने वाला जगदगुरू स्वयं कैसा होगा आप ये पुस्तक पढ कर अनुमान लगा सकते हैं । चिकित्सा की दृष्टि से लिखे हुए लेख या आचरण की जानकारी देने वाले लेखों मे तो इस तरह के शब्द प्रयोग करना समझ भी आता है परन्तु अध्यात्मिक पुस्तक मे ? इसे अध्यात्म नही कहते। वृद्धा संगम तीर्थ मे स्त्री की आयु 90 हजार वर्ष लिखी है जो असम्भव है। अश्व तीर्थ मे सूर्य और उसकी पत्नी को घोड़ा और घोड़ी बनना लिखा है । अब कोइ रामपाल से पूछे कि सूरज जब घोड़ा बन कर धरती पर आया तब दिन और रात कैसे बनते। सूरज धरती से करोड़ों गुना बड़ा है। क्या रामपाल इन सब कहानियों को सच मानता है क्योंकि रामपाल ने इसे 195 पर "तीर्थ स्थापना के प्रमाण" शीर्षक मे लिखा है । 197 पर लिखा है कि राजा जनक का पुनर्जन्म गुरू नानक जी के रूप मे हुआ इस बात का कोई भी प्रमाण नही है। स्वयं गुरू नानक जी ने ये कहीं पर भी नही लिखा है।

अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 241

इतना सुन कर तमोगुण (भगवान शिव) का उपासक रावण क्रोधित होकर नंगी तलवार लेकर सिंहासन से दहाड़ता हुआ कूदा तथा उस नादान प्राणी ने तलवार के अंधा धुंध सत्तर वार ऋषि जी को मारने के लिए किए। परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने एक झाडू की सींक हाथ में पकड़ी हुई थी। उसको ढाल की तरह आगे कर दिया। रावण के सत्तर वार उस नाजुक सींक पर लगे। ऐसे आवाज हुई जैसे लोहे के खम्बे (पीलर) पर तलवार लग रही हो। सिंक टस से मस नहीं हुई।

आइए अब रामपाल की इस गप्प पर विचार करें। वाल्मीकी रामायण मे मुनिन्द्र का नाम भी नहीं है। यहां लिखा है कि रावण ने तिनके (झाड़ू की सींक) पर तलवार से 70 वार किए । क्या कोइ सींक तलवार का सामना कर सकती है? जब रामायण मे ये कहानी है ही नहीं तो क्या सींक पर तलवार टकराने की आवाज सुनने क्या रामपाल गया था? क्या रामपाल की गर्दन के चारों ओर 100 सींक बान्ध कर तलवार से वार करने पर सच मे लोहे के खम्बे से टकराने जैसी आवाज होगी। यदि रामपाल के सिर पर 10 सींक रख कर लाठी के 7 वार करें तो क्या रामपाल का राम-नाम सत्य नहीं हो जाएगा? यदि ये कहें कि ये कबीर की शक्ति थी तो खुद को अवतार बताने वाले रामपाल मे कबीर की एक हजारवां हिस्सा भी शक्ति नहीं होगी? (क्योंकि सीक को दस गुना कर दिया गया है, वार 70 के स्थान पर 7 कर दिए गए हैं , तलवार को लाठी से बदल दिया गया है और मारने वाला भी महाबलवान रावण के स्थान पर आज का सामान्य मनुष्य होगा।) रामपाल के भक्तों को ये प्रयोग साल मे एक बार तो जरूर करना चाहिए। यदि रामपाल का सिर फ़ूट जाए तो समझें कि रामपाल अवतार नहीं है और उन्हे उल्लू बना रहा है।

अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 247

उस समय हनुमान जी अति विचलित थे। उसे संसार में कोई भी अपना दिखाई नहीं दे रहा था। धर्मदास! तब मैं (कबीर परमेश्वर) हनुमान जी के पास गया। मैंने राम-2 शब्द उच्चारण किया। हनुमान ने मेरी ओर देखा तथा उत्तर में जय राम जी कहा, हनुमान ने कहा आओ ऋषि जी आप का चेहरा पहले कभी मैंने देखा है, ध्यान नहीं आ रहा कहाँ देखा है? मैंने(कबीर परमेश्वर ने) कहा मैं बताता हूँ आपने मुझे कहाँ देखा था। हनुमान ने मुझे बैठने को कहा। मैंने उसके निकट बैठ कर वह कंगन वाली बात याद दिलाई तथा कहा मैं वही ऋषि हूँ। उस समय हनुमान आप के पास तत्वज्ञान सुनने का वक्त नहीं था। अब आप के पास पर्याप्त समय है। इसलिए मैं आपको पूर्ण परमात्मा के विषय में ज्ञान सुनाने के लिए आया हूँ। यदि आप की रूचि हो तो चर्चा की जाए। हनुमान ने कहा ऋषिवर! मैं आप का ज्ञान रूचि से सुनूंगा आप मुझे तत्वज्ञान सुनाओ।

पूरी वाल्मीकि रामायण मे कबीर या मुनिन्द्र का नाम भी नहीं है। ये कहानी सन्त कबीर ने कहीं पर भी नहीं लिखी है। ये कहानी या तो रामपाल ने खुद गढी है या गरीबदास/धर्मदास से उधार ली है। इस कहानी का लिखने वाला शेखचिल्ली से भी बड़ा गप्प हांकने वाला है। वह दुष्ट न केवल हनुमान जी का अपमान कर रहा है किन्तु सन्त कबीर का भी अपमान कर रहा है। क्या मुनिन्द्र बने हुए कबीर को कोइ काम नहीं था जो बिना पूछे उपदेश देता था।

एक दिन सीता ने हनुमान को एक सच्चे मोतियों की बहुमुल्य माला दी। हनुमान जी ने उस माला के मणके फोड़-2 कर जमीन पर फैंक दिए। सीता को अच्छा नहीं लगा तथा क्रोधवश हनुमान के प्रति कटुवचन कहे। अरे हनुमान! तूने इतनी कीमती माला का विनाश कर दिया। तू रहा बन्दर का बन्दर! यह राजमहल वनचरों के लिए नहीं है। आज आप ने माला का नाश किया है। कल अन्य बहुमूल्य वस्तुओं को नाश कर डालेगा। तुम तो बन में ही रहने योग्य हो। हनुमान ने कहा हे माता! जिस वस्तु में राम नहीं वह वस्तु मेरे काम नहीं। मैंने मोती को फोड़ कर देखा, उनमें राम नहीं

अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 247

ये कहानी भी न तो महर्षि वाल्मीकि जी की रामायण में है और न ही गोस्वामी तुलसीदास जी की रामचरितमानस मे । यहां पर हनुमान जी को माला और मोती तोड़ने वाला मूर्ख लिखा है ।परन्तु महर्षि वाल्मीकी जी ने हनुमान जी को **वेदों और व्याकरण का विद्वान** लिखा है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने हनुमान जी को सुन्दरकाण्ड मे **"बुद्धिमतां वरिष्ठम्"** अर्थात बुद्धिमाने मे वरिष्ठ (बड़ा) लिखा है। इस तरह की काल्पनिक कहानिया केवल पागल या कमीने लोग ही लिख सकते हैं। जो इस कहानी को सच मानता है वह महामूर्ख है।

अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 252-253

रानी को तो चिंता बनी हुई थी। श्रद्धा से जाप कर रही थी। (कबीर साहेब) करूणामय साहेब का रूप बना कर गुरुदेव रूप में काल आया, आवाज लगाई इन्द्रमति, इन्द्रमति। उसको तो पहले ही डर था, स्मरण करती रही। काल की तरफ नहीं देखा। दो मिनट के बाद जब देखा तो काल का स्वरूप बदल गया। काल का ज्यों का त्यों चेहरा दिखाई देने लगा। करूणामय साहेब का स्वरूप नहीं रहा। जब काल ने देखा कि तेरा तो स्वरूप बदल गया। वह जान गया कि इसके पास कोई शक्ति युक्त मंत्र है। यह कहकर चला गया कि तुझे फिर देखूँगा। अब तो बच गई। रानी बहुत खुश हुई, फूली नहीं समाई। कभी अपनी बांदियों को कहने लगी कि मेरी मृत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने मुझे बचा दिया। राजा के पास गई तथा कहा कि आज मेरी मृत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने रक्षा कर दी। मुझे लेने के लिए काल आया था। राजा ने कहा कि तू ऐसे ही ड्रामें करती रहती है, काल आता तो क्या तुझे छोड़ जाता? ये संत वैसे बहका देते हैं। अब इस बात को वह कैसे माने? खुशी-खुशी में रानी लेट गई। कुछ देर के बाद सर्प बनकर काल फिर आया और रानी को डस लिया। ज्यों ही सर्प ने डसा रानी को पता चल गया। रानी जोर से चिल्लाई। मुझे साँप ने डंस लिया। नौकर भागे। देखते ही देखते एक मोरी (पानी निकलने का छोटा छिद्र) में से वह सर्प घर से बाहर निकल गया। अपने गुरुदेव को पुकार कर रानी बेहोश हो गई।

करूणामय (कबीर) साहेब वहाँ प्रकट हो गए। लोगों को दिखाने के लिए मंत्र बोला और (वे तो बिना मंत्र भी जीवित कर सकते हैं, किसी जंत्र-मंत्र की आवश्यकता नहीं) इन्द्रमती को जीवित कर दिया। रानी ने बड़ा शुक्र मनाया कि हे बंदी छोड़ ! यदि आज आपकी शरण में नहीं होती तो मेरी मृत्यु हो जाती। साहेब ने कहा कि ईन्द्रमति इस काल को मैं तेरे घर में घुसने भी नहीं देता और यह तेरे ऊपर यह हमला भी नहीं करता। परन्तु तुझे विश्वास नहीं होता। तू यह सोचती कि मेरे ऊपर कोई आपत्ति नहीं आनी थी। गुरुजी ने मुझे बहका कर नाम दे दिया। इसलिए तेरे को थोड़ा-सा झटका दिखाया है, नहीं तो बेटी तेरे को विश्वास नहीं होता।

पहले काल कबीर का रूप रख कर आता है फ़िर सांप बन कर रानी को डसने के लिए आता है। इसका मतलब ये है कि रामपाल नयी नयी कहानिया बनाता रहता है। क्या काल और कबीर दोनो को कोइ और काम नही है? कबीर को रानी इन्द्रमति को विश्वास दिलाने की क्या जरूरत पड़ी। यदि कोइ बस या रेल का ड्राइवर छोटा सा एक्सीडैन्ट कर के दिखाए और कहे कि यात्रिओं को विश्वास दिलाने के लिए मैने ये एक्सीडैन्ट किया है नहीं तो मै बिना एक्सीडैन्ट के भी बस या रेल चला सकता था। क्या तब कोइ यात्री उस ड्राइवर का यकीन करेगा ? यदि परमात्मा हर मनुष्य को अपना विश्वास करवाने के लिए ये नाटक करता रहेगा तो इस संसार को पल भर भी

नही चला सकेगा। रामपाल को शक है कि उसकी बेतुकी कहानियों पर कोई भी भरोसा नहीं करेगा ? इसलिए जब भी रामपाल का अनुयायी मुश्किल मे पड़ेगा तो रामपाल कहेगा कि ये सब तो मैने अपना विश्वास जमाने के लिए करा था अन्यथा मैं चाहता तो तुम बीमार नही पड़ते या तुम्हारा एक्सीडैन्ट नहीं होता या तुम्हारा पति/पत्नी/बेटा/बेटी/मां/बाप/भाई/बहन नही मरता। क्या आप विश्वास करेंगे?

क्या आप को इस बात पर हंसी आ रही है। शायद आप को लग रहा होगा रामपाल इतनी गप्प नही हांक सकता। रामपाल द्वारा लिखी गई पुस्तक "भक्त और भगवान 1 " की कुछ गप्प

"भक्त और भगवान 1" पृष्ठ 8 से

वह संजय (कृष्ण दास) मुझ दास के एक सेवक के घर साँपला में रूका। उन्होंने इसकी बहुत सेवा की। कुछ दिन बाद उस भक्त की पत्नी के पेट में पानी की रसौली हो कर फूट गई। असहनीय पीड़ा होने लगी। साँपला के डॉ. ने जवाब दे दिया। फिर रोहतक मैडिकल में आप्रेशन हुआ। डॉ. हैरान रह गये कि आप बच कैसे गए ? तब उस बहन ने कहा कि हमारे सिर पर पूर्ण परमात्मा का पंजा है। यह भी हमारी ही गलती का परिणाम होगा। आज तक 8 वर्ष नाम लिये हो गए थे। कभी बुखार भी नहीं चढा था। हस्पताल से छुट्टी के बाद सीधे आश्रम करौंथा में आए। सर्व वृतांत बताया। तब इस दास ने उन्हें बताया कि यह सब हानि केवल उस संजय के कारण हुई है। इस बात से वे दोनों कहने लगे कि महाराज जी आप ही कहते हो कि द्वार पर आए कुत्ते को भी रोटी डालनी चाहिए। इस दास ने कहा कि पागल कुत्ते को आहार कराना हानिकारक होता है। गुरू द्रोही पागल कुत्ता हो जाता है। श्रद्धालुओं ने इस दास की बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया, चले गए। कुछ ही महीनों पश्चात उनके दोनों लड़कों की भयंकर दुर्घटना हो गई। छोटे बच्चे के सब दाँत बाहर निकल गये, इलाज करवाया। परंतु लड़के की पीड़ा बढ़ती ही जा रही थी। लड़का उस समय 12 वर्ष की आयु का था। लड़के ने कहा कि मुझे गुरू जी के पास आश्रम करौंथा में ले चलो। मैं वहीं ठीक होऊँगा। डॉ. ने सफर करने, हिलने-डुलने आदि से सख्त मना कर रखा था। लड़के का आग्रह देखकर लड़के को लेकर मुझ दास के पास आए। आते ही लड़के ने दण्डवत् प्रणाम किया। उस बच्चे की दशा देख कर मुझ दास को बहुत तरस आया तथा उनसे कहा कि आप दोबारा उपदेश लो और आगे से उस गुरू द्रोही को दूर से भी प्रणाम मत करना। उसके पश्चात उसी दिन उस बच्चे का दर्द समाप्त हो गया। दाँत जो हिल रहे थे जाम हो गए। उससे तीसरे दिन दिल्ली में पंजाब खोड़ गाँव में रविवार का सत्संग था। वहाँ वह लड़का तथा उसका पिता जी दोनों सत्संग सुनने पहुँचे तथा सारी कहानी बताई। उसके बाद सुख से रह रहे हैं।

एक बार दिल्ली में नजफगढ़ में पाँच दिवसीय सत्संग हुआ था। उसके पोस्टर लगाने यह नकली महाराज संजय (जो कृष्ण दास बना हुआ है) अन्य सेवकों के साथ सेवा करने गया हुआ था। नजफगढ़ के आस-पास के भक्तों ने इसको गुरूजी के तुल्य आदर सत्कार दिया। इसको सारा प्रसाद (चाय के साथ बिस्कुट, बर्फी आदि) देते थे और वह पहले उठाता फिर अन्य को वितरित किया जाता था। अनजान संगत को पता नहीं था कि वे गुरूभ्रता पद पर से गिर रहे हैं। जिसका भयंकर परिणाम होता है। कुछ दिनों के पश्चात एक सेवक का लड़का मर गया, एक की इतनी भयंकर दुर्घटना हुई कि बाल-२ बचा लेकिन टांग टूट गई, एक के

पेट में दर्द हुआ तथा एक ही रात्री में बारह हजार रूपये लग कर बाल-बाल बचा। एक की टी.वी. आदि की दुकान नजफगढ़ में भी पूरी तरह जल कर भस्म हो गई, लगभग पचास लाख का नुकसान हुआ था।

एक भक्त की भैंस ने बिजली की तार को मुख से काट दिया। वह भैंस मर गई। भैंस के कारण अर्थ (Earth) अधिक होने से घर की बिजली अधिक हो गई जिस कारण रंगीन टी.वी., वांशिग मशीन, घर की सब फिटिंग जल गई। भारी नुकसान हुआ। जबकि पहले उस भक्त की पत्नी मृत्यु शैय्या पर थी। मुझ दास (रामपाल दास) से उपदेश प्राप्त करते ही स्वस्थ हो गई। उसे ग्यारह वर्ष तक कोई सन्तान नहीं हुई थी। दसवें महिने पुत्र हुआ। फिर उस गुरू द्रोही में आस्था होने से प्रभु ने अपना पंजा उठा लिया। दोबारा उपदेश लिया उसके बाद पूरा परिवार सुखपूर्वक रह रहा है। {पृष्ठ 8-9} **ध्यान से पढ़ें- रामपाल का उपदेश प्राप्त करने के 10 महीने बाद पुत्र हुआ । क्या आप को रामपाल का उपदेश समझ आया। कभी भी अपनी दादी, माता, बहन, पत्नी या बेटी को रामपाल के पास उपदेश लेने न जाने दें अन्यथा 10 महीने बाद होने वाले चमत्कार से आप पागल भी हो सकते हैं । रामपाल खुद आप के सामने अपने उपदेश का रहस्य बता रहा है।**

एक बहन को सोनीपत में नाक से खून बहना शुरू हो गया और इतना खून बहा कि तसला(एक बड़ा लोहे का बर्तन) भर गया। डॉ. के पास दो दिन दाखिल रही, कोई आराम नहीं हुआ। वह उस संजय रूपी सर्प को बहुत अच्छा भक्त जानकर भाई की तरह प्यार करती थी। आश्रम से जाने के बाद उससे मिलती रही। वह भी फोन करता था। जिस कारण परमेश्वर ने पंजा उठा लिया। अचानक नाक से रक्त बहने लगा। सर्व इलाज व्यर्थ सिद्ध हुए। तब वह बहन आश्रम करौंथा में आई और दोबार उपदेश लिया। उसके बाद आज चार वर्ष तक उसे कोई कष्ट नहीं हुआ है। "भक्त और भगवान भाग 1" पृष्ठ 9

एक परिवार की लड़की की शादी हुई। लड़की को एक पुत्र प्राप्त हुआ। उसी समय यह आस्तीन का साँप हरियाणा में आया ही था। उसकी मिठ्ठी-२ बातों से प्रभावित हो कर उस परिवार की आस्था भी उसमें पूर्ण रूप से हो गई। कुछ ही महीनों के पश्चात उस लड़की का पति दुर्घटना में मारा गया। पृष्ठ 9

एक समय इस संजय(कृष्ण दास) पुत्र श्री बलवान सिंह मिस्त्री, गाँव करौंथा की चारों भैंस(पशु) पागल हो कर दिवारों में टक्कर मारने लगी। सर्व जंतर-मंत्र करवाए परंतु कोई लाभ नहीं हुआ। छुड़ानी से जंत्र-मंत्र करवाया। रोहतक के सर्व डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। तब यह संजय(कृष्ण दास) मुझ दास का विधिवत् शिष्य था। उस समय इससे अपनी भैंसों का बचाव नहीं हुआ। मुझ दास के पास आए तब प्रभु कबीर जी की कृपा से वे भैंस(पशु) ठीक हुई। पृष्ठ 14

ये सारी कहानी का अर्थ है कि सब रोग, परेशानी, गरीबी, मौत से बचने और धन्धे मे बरकत के लिए रामपाल के पास आएं। यदि किसी ने रामपाल आश्रम को छोड़ा तो वह बर्बाद हो जाएगा और दूसरों को बरबाद करेगा। ये सारे कामों का दावा तो सड़क छाप तांत्रिक भी करते हैं। रामपाल स्वयं घोषणा कर रहा है कि उसके भक्त कभी भी रोगी नही होते। जिस किसी खून का कैंसर हो वह रामपाल का उपदेश जरूर लें क्योंकि खून के कैंसर मे नाक से खून टपकता है । उसका कैंसर ठीक हो जाएगा। सभी रोगियों को सलाह दी जाती है कि किसी भी बीमारी का ईलाज जगदगुरू रामपाल चुटकी बजाते ही कर देगा। चश्मा (एनक) भी उतार देगा। पागल भैंस को भी ठीक कर देगा। शायद भैंसें भी 10 महीने वाले चमत्कार से डर कर ठीक हो जाती हैं।

अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 255-262

।। पाण्डवों की यज्ञ में सुपच सुदर्शन द्वारा शंख बजाना ।।

सुदर्शन जी के मुख से इस बात को सुन कर भीम ने बताया कि मैं बोला आप तो कमाल के व्यक्ति हो, सौ यज्ञों का फल मांग रहे हो। यह हमारी दूसरी यज्ञ है। आपको सौ का फल कैसे दें? इससे अच्छा तो आप मत आना। आपके बिना कौन सी यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होगी। जब स्वयं भगवान कृष्ण जी हमारे साथ हैं। तो तेरे न आने से क्या यज्ञ पूर्ण नहीं होगा। सर्व वार्ता सुन कर श्री कृष्ण जी ने कहा भीम संतों के साथ ऐसा आपत्तिजनक व्यवहार नहीं करना चाहिए। सात समुद्रों का अंत पाया जा सकता है परंतु सतगुरु (कबीर साहेब) के संत का पार नहीं पा सकते। उस महात्मा सुदर्शन बाल्मीकी के एक बाल के समान तीन लोक भी नहीं हैं। मेरे साथ चलो, उस परमपिता परमात्मा के प्यारे हंस को लाने के लिए। तब पाँचों पाण्डव व श्री कृष्ण भगवान स्वपच सुदर्शन की झोंपड़ी की ओर रथ में बैठकर चले। एक योजन अर्थात् 12 किलोमीटर पहले रथ से उतर कर नंगे पैरों चले तथा रथ को खाली रथवान पीछे-2 चला।

उस समय स्वयं कबीर साहेब सुदर्शन स्वपच का रूप बना कर झोपड़ी में बैठ गए व सुदर्शन को अपनी गुप्त प्रेरणा से मन में संकल्प उठा कर कहीं दूर के संत या भक्त से मिलने भेज दिया जिसमें आने व जाने में कई रोज लगने थे। तब सुदर्शन के रूप में सतगुरु की चमक व शक्ति देख कर सर्व पाण्डव बहुत प्रभावित हुए। स्वयं श्रीकृष्णजी ने लम्बी दण्डवत् प्रणाम की। तब देखा देखी सर्व पाण्डवों ने भी ऐसा ही किया। कृष्ण जी की तरफ नजर करके सुपच सुदर्शन ने आदर पूर्वक कहा कि - हे त्रिभुवननाथ! आज इस दीन के द्वार पर कैसे? मेरा अहोभाग्य है कि आज दीनानाथ विश्वम्भरनाथ मुझ तुच्छ को दर्शन देने स्वयं चल कर आए हैं। सबको आदर पूर्वक बैठना दिया तथा आने का कारण पूछा। उस समय श्री कृष्ण जी ने कहा कि हे जानी-जान! आप सर्व गति (स्थिति) से परिचित हैं। पाण्डवों ने यज्ञ की है। वह आपके बिना सम्पूर्ण नहीं हो रही है। कृपा इन्हें कृतार्थ करें। उसी समय वहां उपस्थित भीम की ओर संकेत करते हुए सुदर्शन रूप धारी परमेश्वर जी ने कहा कि यह वीर मेरे पास आया था तथा अपनी मजबूरी से इसे अवगत करवाया था। उस समय श्री कृष्ण जी ने कहा कि - हे पूर्णब्रह्म! आपने स्वयं अपनी वाणी में कहा है कि -

"संत मिलन को चालिए, तज माया अभिमान। जो—जो पग आगे धरै, सो—सो यज्ञ समान।।"

स्वपच सुदर्शन जी ने थाली वाले मिले हुए उस सारे भोजन को पाँच ग्रास बना कर खा लिया। पाँच बार शंख ने आवाज की। उसके पश्चात् शंख ने आवाज नहीं की।

उसी समय द्रौपदी ने अपनी गलती को स्वीकार करते हुए संत से क्षमा याचना की और सुपच सुदर्शन के चरण अपने हाथों धो कर चरणामृत बनाया। रज भरे (धूलि युक्त) जल को पीने लगी। जब आधा पी लिया तब भगवान कृष्ण जी ने कहा द्रौपदी कुछ अमृत मुझे भी दे दो ताकि मेरा भी कल्याण हो। यह कह कर कृष्ण जी ने द्रौपदी से आधा बचा हुआ चरणामृत पीया। उसी समय वही पंचायन शंख इतने जोरदार आवाज से बजा कि स्वर्ग तक ध्वनि सुनि। तब पाण्डवों की वह यज्ञ सफल हुई।

ये कहानी भी गप्प और झूठ का मूर्खता पूर्ण संगम है। महाभारत के अश्वमेध यज्ञ के प्रकरण

को दो बार देखा परन्तु इस कहानी का कहीं पर संकेत मात्र भी नहीं था। महाभारत के दक्षिण भारत के संस्करण और नीलकण्ठी टीका के संस्करण मे किसी सुदर्शन स्वपच के यज्ञ में आने का कहीं पर भी संकेत नही मिला। कबीर ग्रन्थावली और गुरूग्रन्थ मे उपलब्ध कबीर जी की वाणी मे भी कोइ संकेत नहीं मिला ।

आगे लिखा है कि उस ***समय कबीर साहब सुदर्शन स्वपच का रूप बना कर झोपड़ी मे बैठ गये।*** क्या पूर्ण परमात्मा कबीर को कोइ और काम नहीं था कि लिया और अपना रूप बदल कर दूसरे को धोखा देने के लिए तैयार हो गये। क्या कबीर परमात्मा कोई बहुरूपिया था जो कभी सुदर्शन का रूप बनाता है और कभी 80 साल के बुढे बढई का(जगन्नाथ मन्दिर के समय)। **सुदर्शन के पैरों को गंदा चरणामृत को कृष्णजी को पिलाने की गप्प लेखक की विकृत और गंदी मानसिकता की जानकारी देती है।** ***सुदर्शन बने कबीर का गंदे पैरो का चरणामृत पी कर भी द्रौपदी नरक को गई। द्रौपदी के नरक जाने की बात रामपाल की अध्यात्मिक ज्ञान गंगा पृष्ठ 271 पर लिखी है।*** इस तरह की मूर्खता से कबीर जी का अपमान होता है। प्रत्येक समझदार मनुष्य जानता है कि **अपने पैरों को धो कर गंदगी पिलाने वाला व्यक्ति अत्यन्त घटिया चरित्र और नीच मानसिकता का होता है।** ये सन्त कबीर जी की महानता दर्शाने के स्थान पर उनको बदनाम करने की कोशिश है । यदि सन्त कबीर जी जैसा विद्वान और श्रेष्ठ आचरण वाला व्यक्ति होता तो अत्यन्त हितकारी, सत्य और ज्ञान से भरा हुआ विद्वत्तापूर्ण उपदेश देता। क्रान्तिकारी सन्त कबीर जी ने अपनी वाणी मे केवल मानव हितकारी उपदेश दिया है। सन्त कबीर जी ने रामपाल की तरह बेसिरपैर की गप्प नहीं लिखी हैं । रामपाल ने लिखा है कि सुदर्शन ने दूर रखे हुए शंख को (मुह से हवा फ़ूंके बिना) 5 बार बजाया। क्या रामपाल दूर रखे शंख को एक बार भी बजा सकता है। यदि नही बजा सकता तो रामपाल तत्वदर्शी सन्त नहीं है। किसी भी ग्रन्थ मे नही लिखा है कि यज्ञ की सफ़लता दूर रखे शंख को बजाने से होती है। क्या रामपाल भी अपने पैर धो कर दूसरों को पिलाता है?

गरदन काट कर मारे हुए को जिन्दा करना (अध्यात्मिक ज्ञान गंगा 455)

रामान्नद जी के शरीर से आधा खून और आधा दूध निकला हुआ था।

जगदगुरू तत्वदर्शी पूर्ण सन्त रामपाल को काट कर या सिरिंज से निकाल कर देखा जाए तो 1 बूंद भी दूध नहीं मिलेगा। ये तो इतना भी नहीं जानता के किसी के शरीर मे भी खून के स्थान पर दूध डाल दिया जाए (जैसे डाक्टर नस में ग्लूकोस चढाता है) तो वह कुछ मिनटों मे तड़फ़ तड़फ़ कर मर जाएगा। स्वयं सन्त कबीर दास जी भी सभी मनुष्यों के शरीर को एक

समान बना हुआ मानते थे। रामपाल ने गप्प लिखते समय शरीरविज्ञान का विचार भी नहीं किया। रामपाल के चेलों को रामपाल की एक ऊंगली काट कर देखनी चाहिए। जब कबीर जी अपने गुरू के कटे हुए सिर को जोड़ सकते हैं तो धरती पर अवतार रामपाल भी अपनी ऊंगली जोड़ सकता है।

उदाहरण के लिए गुरू ग्रन्थ साहेब का पृष्ठ 324 की ये पंक्ति देखें। पूरा पद्य पीछे दिया जा चुका है।

हम कत लोहू तुम कत दूध - यहां पर सन्त कबीर जी जन्म के अनुसार जाति मानने वाले ब्राह्मण को कह रहे हैं "क्या तुम्हारे शरीर मे दूध और हमारे शरीर में खून है?) अर्थात सब के शरीर मे एक समान खून होता है। जन्म से कोइ ब्राह्मण नही होता।

"सिकंदर लौधी बादशाह का असाध्य जलन रोग ठीक करना"

शाम का समय हो गया था। बीरसिंह को पता था कि इस समय साहेब कबीर जी अपने औपचारिक गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में ही होते हैं। यह समय परमेश्वर कबीर जी आपके आश्रम में ही करना चाहते है। सेवक ने अन्दर जाकर रामानन्द जी को बताया कि दिल्ली के बादशाह सिकंदर लौधी आए हैं। रामानन्द जी मुसलमानों से घृणा करते थे। रामानन्द जी ने कहा कि मैं इन मलेच्छों (मुसलमानों) की शक्ल भी नहीं देखता। कह दो कि बाहर बैठ जाएगा। जब सिकंदर लोधी ने यह सुना तो क्रोध में भरकर (क्योंकि राजा में अहंकार बहुत होता है और वह दिल्ली का बादशाह) कहा कि यह दो कोड़ी का महात्मा दिल्ली के बादशाह का अनादर कर सकता है तो साधारण मुसलमान के साथ यह कैसा व्यवहार करता होगा? इसको मज़ा चखा दूं। रामानन्द जी अलग आसन पर बैठे थे। सिकंदर लोधी ने जाकर रामानन्द जी की गर्दन तलवार से काट दी। वापिस चल पड़ा और फिर उसको याद आया कि मैं जिस कार्य के लिए आया था? और वह काम अब पूरा नहीं होगा। कहा कि बीरसिंह देख मैं क्या जुल्म कर

बैठा? मेरे बहुत बुरे दिन हैं। चाहता हूँ अच्छा करना और होता है बुरा। कबीर साहेब के गुरुदेव की हत्या कर दी। अब वे कभी भी मेरे ऊपर दयादृष्टि नहीं करेंगे। मुझे तो यह दुःख भोग कर ही मरना पड़ेगा। मैं बहुत पापी जीव हूँ। यह कहता हुआ आश्रम से बाहर की ओर चल पड़ा। बीरसिंह अपने बादशाह के आगे क्या बोलता। ज्योंही आश्रम से बाहर आए, कबीर साहेब आते दिखाई दिए। बीरसिंह ने कहा कि महाराज जी मेरे गुरुदेव कबीर साहेब आ गए। ज्योंही कबीर साहेब थोड़ी दूर रह गए बीरसिंह ने जमीन पर लेटकर उनको दण्डवत् प्रणाम किया। अब सिकंदर बहुत घबराया हुआ था। {अगर उसने यह जुल्म नहीं किया होता तो वह दण्डवत् नहीं करता और दण्डवत् नहीं करता तो साहेब उस पर रजा भी नहीं बकस पाते। क्योंकि यह नियम होता है।

कबीर परमेश्वर ने यहाँ पर एक तीर से दो शिकार किए। स्वामी रामान्नद जी में धर्म भेद-भाव की भावना शेष थी, वह भी निकालनी थी। रामान्नद जी मुसलमानों को हिन्दूओं से अभी भी भिन्न तथा हेय मानते थे। सिकंदर में अहंकार की भावना थी। यदि वह नम्र नहीं होता तो कबीर साहेब कृपा नहीं करते तथा सिकंदर स्वस्थ नहीं होता} बीरसिंह को देखकर तथा डरते हुए सिकंदर लौधी ने भी दण्डवत् प्रणाम किया। कबीर परमेश्वर जी ने दोनों के सिर पर हाथ रखा और कहा कि दो-2 नरेश आज मुझ गरीब के पास कैसे आए हैं ? मुझ गरीब को कैसे दर्शन दिए? परमेश्वर कबीर जी ने अपना हाथ उठाया भी नहीं था कि सिकंदर का जलन का रोग समाप्त हो गया। सिकंदर लौधी की आँखों में पानी आ गया।

सन्त कबीर के सम्बन्ध मे कई कहानिया मिलती हैं जो एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। अब कौन सी कहानी सच है और कौन सी झूठ ? कबीर पन्थ की सबसे पुरानी गद्दी कबीर चौरा है। कबीर चौरा गद्दी वाले ये दावा करते हैं कि इस गद्दी की नींव स्वयं सन्त कबीर जी ने रखी थी। http://www.kabirchaura.com पर दी गई परम्परा सीधे कबीर जी से शुरू है। वहां पर सिकन्दर लोधी द्वारा सन्त कबीर जी को जंजीरों से बांध कर पानी मे फ़ेंकने का वर्णन है। आप स्वयं वेबसाईट पर जा कर देखें। {http://www.kabirchaura.com/biography/bio9.htm }

अगर रामपाल की लिखी कहानी को सच माने तो परमात्मा कबीर अत्यन्त ही दुष्ट, देशद्रोही और धर्मद्रोही सिद्ध होते है। क्योंकि प्रतिदिन अनेक गायों को कटवाने वाला और सैकड़ों हिन्दू लड़कियों और महिलाओं को जबरदस्ती अपने हरम मे रखने वाले सिकन्दर लौधी (लोदी) की जलन ठीक करना बहुत बुरी बात है। जिस लौधी मे सन्त रामानन्द को मारा था उसे आराम के स्थान पर दर्द या मृत्यु देना ही सही न्याय होता। क्या परमात्मा कबीर रामानन्द को मारने वाले के साष्टांग प्रणाम से धोखा खा गया था जो उसे ठीक कर दिया। यदि कोइ रामपाल का या रामपाल के

निकट सम्बन्धी का सिर फ़ोड़ दे और फ़िर रामपाल को साष्टांग प्रणाम करे तो क्या रामपाल उसे माफ़ कर देगा? रामपाल के अनुयायियों को ये जांच कर के देखनी चाहिए। यदि अपना सिर फ़ूटने पर साष्टांग प्रणाम से रामपाल माफ़ करे तो उसे पूर्ण तत्वदर्शी सन्त समझे।

"स्वामी रामानन्द जी को जीवित करना"

परमेश्वर कबीर जी ने अन्दर जाकर देखा रामान्नद जी का धड़ कहीं पर और सिर कहीं पर पड़ा था। शरीर पर चादर डाल रखी थी। कबीर साहेब ने अपने गुरुदेव के मृत शरीर को दण्डवत् प्रणाम किया और चरण छुए तथा कहा कि गुरुदेव उठो। दिल्ली के बादशाह आपके दर्शनार्थ आए हैं। एक बार उठना। दूसरी बार ही कहा था, सिर अपने आप उठकर धड़ पर लग गया और रामानन्द जी जीवित हो गए "बोलो सतगुरु देव की जय"!।

यदि रामपाल हाथों के काटे हुए नाखून या काटे हुए सिर के बाल या पेड़ से तोड़ा हुआ पत्ता/ फ़ल/ फ़ूल को वापिस जोड़ दे तो माने कि ये कहानी सच्ची है । यदि नहीं जोड़ सका तो रामपाल तत्वदर्शी सन्त नहीं और ये कहानी झूठी है। जांच जरूर करें और सच का पता लगाएं।

संत कबीरदास और भविष्य ज्ञान

प्रश्न : संत धर्मदास जी की गद्दी दामा खेड़ा वाले कहते हैं कि इस गद्दी से नाम प्राप्त करने से मोक्ष संभव है ?

उत्तर : संत धर्मदास जी का ज्येष्ठ पुत्र श्री नारायण दास काल का भेजा हुआ दूत था। उसने बार-बार समझाने से भी परमेश्वर कबीर साहेब जी से उपदेश नहीं लिया। पुत्र प्रेम में व्याकुल संत धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर साहेब जी ने नारायण दास जी का वास्तविक स्वरूप दर्शाया। संत धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु ! मेरा वंश तो काल का वंश होगा। यह

कह कर संत धर्मदास जी बेहोंश(अचेत) हो गए। काफी देर बाद होश में आए। फिर भी अतिचिंतित रहने लगे। उस प्रिय भक्त का दुःख निवारण करने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा कि धर्मदास वंश की चिंता मत कर। यह काल का दूत है। उसका वंश पूरा नष्ट हो जाएगा तथा तेरा बियालीस पीढी तक वंश चलेगा।

रामपाल की झूठ को समझने के लिए उपर दिए गए विवरण को 2 बार पढें । पाठक विचार करें कि यदि सन्त कबीर दास 7 पीढी या 42 पीढी का भविष्य जानते तो वह कार्य कर जाते जो पूरे भारत का भविष्य अंधकारमय होने से बचा सकते थे। सात पीढी (लगभग 175-200 साल) का भविष्य तो दूर अपनी मृत्यु से

10 साल दूर का भविष्य भी नहीं जानते थे। उदाहरण के लिए महाराणा संग्राम सिंह जिसे राणा सांगा के नाम से जाना जाता है। राणा सांगा का समय (April 12, 1484 से 17 March 1527 तक) स्वीकार किया जाता है। राण सांगा ने 1509 से 1527 तक शासन किया । कबीर जी का समय (1398-1518) है। सन 1527 मे बाबर ने राणा सांगा को युद्ध मे हरा दिया और मुगल वंश की नींव रखी। ये वही बाबर है जिसके अत्याचारों को देख कर गुरू नानक देव जी ने बाबर को जाबर (निर्दयी) कहा था।

यदि कबीर जी भविष्य जानते तो राणा सांगा को भविष्य बताते और उसे बाबर से होने वाले युद्ध के लिए तैयार होने के लिए कहते। यदि कबीर जी पूर्ण परमात्मा थे तो उन्होने बाबर को हराने में राणा सांगा की मदद क्यों न की। यदि बाबर उस युद्ध को हार जाता तो भारत से मुगलिया सल्तनत सदा के लिए समाप्त हो जाती । तब मुगल शासक ना तो गुरू नानक देव जी से जेल मे चक्की चलवाते, न ही गुरू अर्जुन देव और गुरू तेग बहादुर जी का बलिदान होता। न प्रतिदिन हजारों गाय कटती और न ही औरंगजेब हर दिन सवा मन जनेउ उतरवाता। यदि बाबर हार जाता तो न 1947 मे पाकिस्तान बनता और न ही बंटवारे के समय 10 लाख से अधिक लोग मारे जाते।